पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2014-16

ओ३म्

कृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१६, अंक:-७, जनवरी, सन्-२०१४, सं०-२०७० वि०, दयानंदाब्द १९०, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११४; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

इतिहास के झरोखे से

पिता

अब्दुल्लाह गाँधी का हुआ धर्म परिवर्तन से मोहभंग

शुद्ध होकर फिर बने हीरालाल गाँधी

महात्मा गाँधी अपने पुत्र को वापस पाकर हुए अत्यंत प्रसन्न

पुत्र

-डॉ. विवेक आर्य-

(गतांक से आगे)

माता कस्तूरबा का अपने पुत्र के नाम मार्मिक पत्र

"तुम्हारे आचरण से मेरे लिए जीवन भारी हो गया है। मेरे प्रिय पुत्र हीरालाल, मैंने सुना है कि तुमको मद्रास में आधी रात में पुलिस के सिपाही ने शराब के नशे में असभ्य आचरण करते देखा और गिरफ्तार कर लिया। दूसरे दिन तुमको अदालत में पेश किया गा। निस्सदेह वे भले आदमी थे, जिन्होंने तुम्हारे साथ बड़ी नरमाई का व्यवहार किया। तुमको बहुत साधारण सजा देते हुए मजिस्ट्रेट ने भी तुम्हारे पिता के प्रति आदर का भाव जाहिर किया। जब से मैंने इस घटना का समाचार सुना है मेरा दिल बहुत दुखी है। मुझे नहीं मालूम कि तुम उस रात्रि को अकेले थे या तुम्हारे कुसाथी भी तुम्हारे साथ थे? कुछ भी तुमने जो किया ठीक नहीं किया। मेरी समझ में नहीं आता कि तुम्हारे इस व्यवहार के बारे में क्या कहूँ? मैं वर्षों से तुम्हें समझाती आ रही हूँ कि तुमको अपने पर काबू रखना चाहिए। पर, तुम दिन पर दिन बिगड़ते ही जाते हो? अब तो मेरे लिए तुम्हारा आचरण इतना असह्य हो गया है कि मुझे अपना जीवन ही भारी मालूम होने लगा है। जरा सोचो तो, तुम इस बुढ़ापे में अपने माता पिता को कितना कष्ट पहुँचा रहे हो? तुम्हारे पिता किसी को कुछ नहीं कहते पर मैं जानती हूँ कि तुम्हारे आचरण से उनके हृदय पर कैसी चोट लग रही है? उनका हृदय टुकड़े टुकड़े हो रहा है। तुम हमारी भावनाओं को चोट पहुँचा कर बहुत बड़ा पाप कर रहे हो। हमारे पुत्र होकर भी तुम दुश्मन सा व्यवहार कर रहे हो। तुमने तो हया-शर्म सबको तिलांजलि दे दी है। मैंने सुना है कि इधर अपनी आवारागर्दी से तुम अपने महान पिता का मजाक भी उड़ाने लग गये हो। तुम जैसे अकलमंद लड़के से यह उम्मीद नहीं थी। तुम महसूस नहीं करते किअपने पिता की अपकीर्ति करते हुए तुम अपने आप ही जलील होते हो। उनके दिल में तुम्हारे लिए सिवा प्रेम के और कुछ नहीं है। तुम्हें पता है कि वे चरित्र की शुद्धि पर कितना जोर देते हैं, लेकिन तुमने उनकी सलाह पर कभी ध्यान नहीं दिया। फिर भी उन्होंने तुम्हें अपने पास रखने, पालन पोषण करने और यहाँ तक कि तुम्हारी सेवा करने के लिए रजामंदी प्रकट की। लेकिन तुम हमेशा कृतघ्नी बने रहे। उन्हें दुनिया और भी बहुत काम हैं। इससे ज्यादा और तुम्हारे लिए वे क्या करें? वे अपने भाग्य को कोस लेते हैं। परमात्मा उन्हें यथेच्छ आयु दे कि वे अपने मिशन को पूरा कर सकें। लेकिन मैं तो एक कमजोर बूढ़ी औरत हूँ और यह मानसिक व्यथा बर्दाश्त नहीं होती। तुम्हारे पिता के पास रोजाना तुम्हारे व्यवहार की शिकायतें आ रही हैं उन्हें वह सब कड़वी घूंट पीनी पड़ती है। लेकिन तुमने मेरे मुँह छुपाने तक को कहीं भी जगह नहीं छोड़ी है। शर्म के मारे परिचितों या अपरिचितों में उठने बैठने लायक भी नहीं रही हूँ। तुम्हारे पिता तुम्हें हमेशा क्षमा कर देते हैं, लेकिन याद रखो, परमेश्वर तुम्हें कभी क्षमा नहीं करेंगे।

मद्रास में तुम एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के मेहमान थे। परन्तु तुमने आतिथ्य का नाजायज फायदा उठाया और बड़े बेहूदा व्यवहार किये। इससे तुम्हारे मेजबान को कितना कष्ट हुआ होगा? प्रतिदिन सुबह उठते ही मैं काँप जाती हूँ कि पता नहीं आज के अखबार में क्या नयी खबर आयेगी? कई बार मैं सोचती हूँ कि तुम कहाँ रहते हो? कहाँ सोते हो और क्या खाते हो? शायद तुम निषिद्ध भोजन भी करते हो। इन सबको सोचते हुए बेचैनी में पलकों पर रातें काट देती हूँ। कई बार मेरी इच्छा तुमको मिलने की होती है लेकिन मुझे नहीं सूझता कि मैं तुम्हें कहाँ मिलूँ? तुम मेरे सबसे बड़े लड़के हो और अब पचासवें पर पहुँच रहे हो। मुझे यह भी डर लगता है कि कहीं तुम मिलने पर मेरी बेइज्जती न कर दो।

मुझे मालूम नहीं कि तुमने अपने पूर्वजों के धर्म को क्यों छोड़ दिया है, लेकिन सुना है कि तुम दूसरे भोले भाले आदमियों को अपना अनुसरण करने के लिए बहकाते फिरते हो? क्या तुम्हें अपनी कमियाँ नहीं मालूम? तुम 'धर्म' के विषय में जानते ही क्या हो? तुम अपनी इस मानसिक अवस्था में विवेक बुद्धि नहीं रख सकते? लोगों को इस कारण धोखा हो जाता है क्योंकि तुम एक महान पिता के पुत्र हो। तुम्हें धर्म उपदेश का अधिकार ही नहीं, क्योंकि तुम तो अर्थदास हो। जो तुम्हें पैसा देता रहे तुम उसी के रहते हो। तुम अपने को और अपनी आत्मा को तबाह कर रहे हो। भविष्य में यदि तुम्हारी यही करतूतें रहीं तो तुम्हें कोई कौड़ियों के भाव भी नहीं पूछेगा। इससे मैं तुम्हें कहती हूँ जरा डरो, विचार करो और अपनी बेवकूफी से बाज आओ। मुझे तुम्हारा धर्म परिवर्तन बिलकुल पसंद नहीं है। लेकिन जब मैंने पत्रों में पढ़ा कि तुम अपना सुधार करना चाहते होतो मेरा अंतःकरण इस बात से आह्लादित हो गया कि अब तुम ठीक जिंदगी बसर करोगे लेकिन तुमने तो उन सारी उम्मीदों पर पानी फेर दिया। अभी बम्बई में तुम्हारे कुछ पुराने मित्रों और शुभ चाहने वालों ने तुम्हें पहले से भी बदतर हालत में देखा है। तुम्हें यह भी मालूम है कि तुम्हारी इन कारस्तानियों से तुम्हारे पुत्र को कितना कष्ट पहुँच रहा है। तुम्हारी लड़कियाँ और तुम्हारा दामाद सभी इस दुख भार को सहने में असमर्थ हो रहे हैं, जो तुम्हारी करतूतों से उन्हें होता है।"

जिन मुसलमानों ने हीरालाल के मुसलमान बनने और उसके बाद की हरकतों में रूचि दिखाई है, उनको सम्बोधित करते हुए श्रीमती गाँधी लिखती हैं- 'आप लोगों के व्यवहार को मैं समझ नही सकी। मुझे तो सिर्फ उन लोगों से कहना है, जो इन दिनों मेरे पुत्र की वर्तमान गतिविधियों में तत्परता दिखा रहे हैं।'

मैं जानती हूँ कि मुझे इससे प्रसन्नता भी है कि हमारे चिर परिचित मुसलमान मित्रों और विचारशील मुसलमानों ने इस आकस्मिक घटना की निंदा की है। आज मुझे उच्चमना डॉ.अंसारी की उपस्थिति का अभाव बहुत खल रहा है, वे यदि होते तो आप लोगों और मेरे पुत्र को सत्परामर्श देते, मगर उनके समान ही प्रभावशाली तथा उदार मुसलमान हैं, यद्यपि उनसे मैं सुपरिचित नहीं हूँ जोकि मुझे आशा है, तुमको उचित सलाह देंगे। मेरे लड़के को सुधारने की अपेक्षा मैं देखती हूँ कि इस नाम मात्र के धर्म परिवर्तन से उसकी आदतें बद से बदतर हो गई हैं। आपको चाहिए कि आप उसको उसकी बुरी आदतों के लिए डाँटें और उसको उल्टे रास्ते से अलग करें। परन्तु मुझे यह बताया गया है कि आप उसे उसी उलटे मार्ग पर चलने के लिए बढ़ावा देते हैं। कुछ लोगों ने मेरे लड़के को 'मौलवी' तक कहना शुरू कर दिया है। क्या यह उचित है? क्या आपका धर्म एक शराबी को मौलवी कहने का समर्थन करता है? मद्रास में उसके असद् आचरण के बाद भी स्टेशन पर कुछ मुसलमान उसको विदाई देने आये। मुझे नहीं मालूम कि उसको इस प्रकार का बढ़ावा देने में आप क्या खुशी महसूस करते हैं। यदि वास्तव में आप उसे अपना भाई मानते हैं, तो आप कभी भी ऐसा नहीं करेंगे, जैसाकि कर रहे हैं, वह उसके लिए फायदेमंद नहीं है। पर यदि आप केवल हमारी फजीहत करना चाहते हैं तो मुझे आप लोगों को कुछ भी नहीं कहना है। आप जितनी भी बुराई करना चाहें कर सकते हैं। लेकिन एक दुखिया और बूढ़ी माता की कमजोर आवाज शायद आप में से कुछ एक की अन्तरआत्मा को जगा दे। मेरा यह फर्ज है कि मैं वह बात आप से भी कह दूँ जो मैं अपने पुत्र से कहती रहती हूँ। वह यह है कि परमात्मा की नजर में तुम कोई भला काम नहीं कर रहे हो।

(कस्तूरबा के हीरालाल के नाम लिखे गये पत्र को पढ़कर कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने स्पष्ट रूप से इस हीरालाल के मुसलमान बनने की तीव्र आलोचना की है एवं समझदार मुसलमानों से हीरालाल को समझाने की सलाह दी है।)

हीरालाल गाँधी को इस्लाम से धोखा और आर्यसमाज द्वारा उनकी शुद्धि

अब्दुल्लाह बनने के लिए हीरालाल

(शेष पृ. 3 पर.....)

विनय पीयूष

वही अन्तर में सभी के !

तदेजति तन्नैजति तददूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य सर्वस्यास्य वाह्यतः।।

(यजु0 40/5)

वह सचल, अविचल,
निकट भी, दूर भी,
वही अन्तर में सभी के
और बाहर भी वही!

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

जहाँ खिला था 'आर्य लोक वार्ता' का 'कमल'

२०१३ के मध्य में अपनी उत्तराखण्ड-यात्रा से लौटे श्री पाल प्रवीण द्वारा श्रीमती कमल अग्रवाल के निधन की दुःखद सूचना ने न कि मुझे विचलित कर दिया, वरन् अतीत के वातायन में झाँकने को विवश कर दिया।

श्रीमती कमल अग्रवाल आज से एक दशक पूर्व बी-२३१, इन्दिरा नगर, लखनऊ में निवास करती थीं। पति इंजीनियर जे.पी.अग्रवाल सिंचाई विभाग, उ.प्र. में मुख्य अभियन्ता थे। उनके मकान पर 'ओ३म्' ध्वज लगा रहता था।। वे आर्य समाज इन्दिरा नगर के सदस्य थे जहाँ उन दिनों महीने के प्रत्येक दूसरे रविवार को मेरा प्रवचन निर्धारित था। इस परिचय से यज्ञ हवन संस्कार का सिलसिला चल पड़ा जो प्रायः जे.पी.अग्रवाल के यहाँ होते रहते थे तथा वे अन्यों को भी प्रेरित करते रहते थे। जे.पी.अग्रवाल की गतिविधियों का संचालन सूत्र श्रीमती कमल अग्रवाल के हाथों में था। यद्यपि समस्त प्रकार की भौतिक सुख-सुविधाएँ उन्हें सुलभ थीं, तथापि श्रीमती कमल अध्यात्म की ओर उन्मुख थीं तथा वे योग की कक्षाएँ भी लगाती थीं। उस समय तक बाबा रामदेव जी की योग-साधना पूरी तरह उभर नहीं पायी थी। सामाजिक सरोकारों की दृष्टि से कमल जी एक 'बुटीक' भी चलाती थीं; जहाँ संभ्रान्त परिवारों की महिलाएँ योगदान किया करती थीं। इस परिवार में वेदमनीषी पं.हरिवंशलाल मेहता का वर्चस्व था।

यह वह दौर था, जब मैं 'आर्य लोक वार्ता' के प्रकाशन की संभावनाएँ तलाश रहा था। जे.पी.अग्रवाल ने मेहता जी से इस सम्बन्ध में चर्चा की तो मेहता जी ने तत्काल पाँच सौ रुपये जे.पी.अग्रवाल को 'आर्य लोक वार्ता' का प्रकाशन प्रारम्भ करने हेतु दे दिये। इन्हीं क्षणों में कवि श्री अमृत खरे ने अपना पहला काव्यानुवाद-ऋग्वेद १/१/१७- 'शीश झुकाते आते हैं' मुझे सौंप दिया। स्वामी आत्मबोध सरस्वती जी का भी उन्हीं दिनों शुभागमन हुआ और जे.पी.अग्रवाल के आवास पर ठहरे थे। फलतः जुलाई, १९९८ में 'आर्य लोक वार्ता' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। प्रथम अंक का विमोचन आर्य समाज लालबाग के साप्ताहिक कार्यक्रम में वेदमनीषी हरिवंशलाल मेहता के कर कमलों से श्री धीरेन्द्र कोहली के पुराने हैदराबाद (लखनऊ) स्थित आवास पर सम्पन्न हुआ। इस सबके मूल में श्रीमती कमल अग्रवाल की प्रेरणा शक्ति कार्य कर रही थी। मेहता जी के प्रथम आशीर्वाद के फलस्वरूप आर्य समाज चन्द्रनगर, आदर्शनगर, राजाजीपुरम्, शृंगारनगर इत्यादि आर्य समाजों का स्नेह-सहयोग 'आर्य लोक वार्ता' को मिलना संभव हो सका।

श्रीमती कमल अग्रवाल द्वारा तीन महत्त्वपूर्ण सूत्र प्राप्त हुए थे; जो आर्य लोक वार्ता की वांछित प्रगति के स्रोत बने। प्रथम सूत्र का नाम था- 'पाल प्रवीण'। पाल प्रवीण से जे.पी.अग्रवाल की भेंट होती रहती थी। प्रवीण जी की वैदिक सिद्धान्तों के संबन्ध में कतिपय जिज्ञासाएँ थीं। उन जिज्ञासाओं का समाधान मिलना आवश्यक था। संयोगवश, आर्य समाज लालबाग का साप्ताहिक सत्संग एक दिन आर्य प्रतिनिधि सभा, मीराबाई मार्ग की यज्ञशाला में था- तो पाल प्रवीण जी वहाँ उपस्थित थे। महीने का पाँचवाँ रविवार होने के कारण मेरा प्रवचन हो रहा था। प्रवचन के उपरान्त पाल प्रवीण से मेरी भेंट हुई, तो उनकी जिज्ञासाओं को उचित समाधान मिला जो मेरे पाल प्रवीण जी से स्नेह-सूत्र का संबल बना। 'आर्य लोक वार्ता' को पाल प्रवीण द्वारा पश्चिमी क्षेत्रों मेरठ और दिल्ली में नया क्षितिज मिला; साथ ही लखनऊ में वैदिक सत्संग अलीगंज के माध्यम से आर.डी.कटियार तथा पी.एल.तिवारी जैसे उदाराशय और विज्ञजनों का आश्रय भी।

श्रीमती कमल द्वारा दूसरा सूत्र मिला- श्रीमती मालती त्यागी, प्रधानाचार्या, भारतीय विद्या भवन विद्यालय, गोमती नगर के रूप में। श्रीमती मालती त्यागी के पतिदेव श्री राकेश त्यागी एडवोकेट, तथा पिताश्री रमेशचन्द्र त्यागी (से.नि. अधिकारी, भूगर्भ विभाग), रवीन्द्र त्यागी, अनिल त्यागी अर्थात् सम्पूर्ण त्यागी परिवार वैदिक सिद्धान्तों और आर्य समाज का अनुयायी है। गोमती नगर में 'आर्य लोक वार्ता' के लखनऊ में सर्वाधिक पाठक हैं। उसका बहुत कुछ श्रेय त्यागी परिवार को है। समय समय पर यज्ञ संस्कार इत्यादि कार्यक्रमों के अयोजन उनके माध्यम से मिलते रहे, जिनके द्वारा 'आर्य लोक वार्ता' को विस्तार मिलता रहा। श्री पीयूषकान्त एवं पतंजलि योग समिति के कार्यकलापों ने इस रिश्ते को और मजबूती प्रदान की।

श्रीमती कमल अग्रवाल ने तीसरा महत्त्वपूर्ण सूत्र मेरे हाथों में सौंपा- वह है- श्रीमती मधु बत्रा (चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट) एवं डॉ.रजत बत्रा (कायोनिटिक ऑटोमोटिव्ज, महानगर, लखनऊ)। डॉ.रजत बत्रा लखनऊ विश्वविद्यालय में प्राध्यापक थे किन्तु वे स्वेच्छया वहाँ से त्यागपत्र देकर उद्योग जगत में आये। आज कायोनिटिक आटो. के अलावा उनके पास कई प्रतिष्ठान हैं। उनके व्यक्तित्व में आकर्षण है। डॉ.रजत की शालीनता, व्यवहार कुशलता के साथ आर्ष वैदिक परम्पराओं के प्रति आस्था ने उनके कार्यों को आगे बढ़ाया। जो वैदिक संस्कार अपने माता-पिता से प्राप्त हुए उन्हें डॉ.रजत बत्रा ने पल्लवित किया। अपने परिवार और परिवार के बाहर भी वे वैदिक यज्ञ, संस्कारों के लिए लोगों को प्रेरित करते रहते हैं।

वह आँगन कमल अग्रवाल का था; जहाँ 'आर्य लोक वार्ता' रूपी कमल की पँखुड़ियों ने पहली बार अपनी आँखें खोली थीं। विश्वरथ को लेकर अपनी सतरंगी वल्गाओं (अथर्व.१९/५३/१) के साथ सरपट दौड़ रहे कालरूपी अश्व ने ०१.०३.१३ को उन्हें भी अपनी चपेट में ले लिया। तथापि अपने सत्कार्यों के माध्यम से वे सदा जीवित रहेंगी-

लोक हित में जो कदम पीछे कभी धरते नहीं,
और जो सत् कार्य करते, वे कभी मरते नहीं।

वेदप्र. श. शास्त्री

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१३७

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में सप्तम समुल्लास का अंश

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।
वीर्य्यमसि वीर्य्यं मयि धेहि।
बलमसि बलं मयि धेहि।
ओजोऽस्योजो मयि धेहि।
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि।
सहोऽसि सहो मयि धेहि।।२।। यजु./१९/९

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।३।।

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।४।।

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।५।।

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्त होता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।६।। यजु./३४/१,२,३,४

आप प्रकाशस्वरूप हैं कृपा कर मुझ में भी प्रकाश स्थापन कीजिये। आप अनन्त पराक्रमयुक्त हैं इसलिये मुझ में भी कृपाकटाक्ष से पूर्ण पराक्रम धरिये। आप अनन्त बलयुक्त हैं इसलिये मुझ में भी बल धारण कीजिये। आप अनन्त सामर्थ्ययुक्त हैं मुझ को भी पूर्ण सामर्थ्य

स्तुति प्रार्थना कैसी हो?

दीजिये। आप दुष्ट काम और दुष्टों पर क्रोधकारी हैं, मुझको भी वैसा ही कीजिये। आप निन्दा, स्तुति और स्वअपराधियों का सहन करने वाले हैं, कृपा से मुझ को भी वैसा ही कीजिये।।२।।

हे दयानिधे! आप की कृपा से जो मेरा मन जागते में दूर-दूर जाता, दिव्य गुणयुक्त रहता है, और वही सोते हुए मेरा मन सुषुप्ति को प्राप्त होता वा स्वप्न में दूर-दूर जाने के समान व्यवहार करता सब प्रकाशकों का प्रकाशक, एक वह मेरा मन शिवसंकल्प अर्थात् अपने और दूसरे प्राणियों के अर्थ कल्याण का संकल्प करनेहारा होवे। किसी की हानि करने की इच्छायुक्त कभी न होवे।।३।।

हे सर्वान्तर्यामी! जिससे कर्म करने हारे धैर्ययुक्त विद्वान् लोग यज्ञ और युद्धादि कर्म करते हैं जो अपूर्व सामर्थ्ययुक्त, पूजनीय और प्रजा के भीतर रहने वाला है, वह मेरा मन धर्म करने की इच्छा युक्त होकर अधर्म को सर्वथा छोड़ देवे।।४।।

जो उत्कृष्ट ज्ञान और दूसरे को चितानेहारा निश्चयात्मकवृत्ति है और जो प्रजाओं में भीतर प्रकाशयुक्त और नाशरहित है जिसके बिना कोई कुछ भी कर्म नहीं कर सकता, वह मेरा मन शुद्ध गुणों की इच्छा करके दुष्ट गुणों से पृथक रहे।।५।।

हे जगदीश्वर! जिससे सब योगी लोग इन सब भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान व्यवहारों को जानते, जो नाशरहित जीवात्मा को परमात्मा के साथ मिलके सब प्रकार त्रिकालज्ञ करता है, जिसमें ज्ञान और क्रिया है, पांच ज्ञानेन्द्रिय बुद्धि और आत्मायुक्त रहता है, उस योगरूप यज्ञ को जिससे बढ़ाते हैं, वह मेरा मन योग विज्ञानयुक्त होकर अविद्यादि क्लेशों से पृथक् रहे।।६।। (क्रमशः)

वेदांजलि

दानी का अक्षय कल्याण होता है

❑ पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

यदंग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेत्तत् सत्यम् अंगिरः।। -ऋग्वेद 1/1/6

शब्दार्थ-

हे (अंग) हे विश्व के अंगभूत विराट्! हे (अग्ने) हे विश्व को तेजप्रकाश और ज्ञानदाता परमात्मन्! हे (अंगिरः) हे विश्व के प्राणस्वरूप विधाता! (त्वम्) आप (दाशुषे) दानशील पुरुष के लिए, पुण्यात्मा के लिए (भद्रं करिष्यसि) कल्याण करते हैं। (तव इत् तत्) आपका ही वह (सत्यम्) सत्य है, अटल नियम है।

व्याख्या-

मंत्र के दो भाग हैं। पहले में प्रभु की स्तुति है और दूसरे में उसके कार्य का वर्णन है। दोनों ही भाग बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

पहले मंत्र- पठित प्रभु के विशेषणों पर विचार कीजिए। पहला विशेषण है अंग। इसका अभिप्राय है कि विराट्रूप से यह विश्व भगवान् के अंग के समान है, जैसे- यह भूमि प्रभु के चरणों के समान है, द्यौ अर्थात् समस्त तेजोमय ऊर्ध्व जगत् प्रभु के शिर के समान है, विशाल अन्तरिक्ष उसके पेट के समान है, पर्वत उसके शरीर की अस्थियों के समान हैं, बहते हुए नदी-नाले उस शरीर की नस-नाड़ियाँ हैं, सूर्य और चन्द्रमा उसके दोनों नेत्रों के समान हैं और प्रवहमान वायु उसका श्वासोच्छ्वास है।

दूसरा विशेषण है अग्नि। इसके अर्थ का बहुत व्यापक क्षेत्र है। वेद-व्याख्याता आचार्य यास्क ने इसके अर्थगौरव को देखकर ही अपने और शाकपूणि आदि आचार्यों के मतों को दिखाते हुए बताया है कि यह शब्द एक धातु से नहीं, अपितु- इण् गतौ, अंचू गतिपूजनयोः, दह भस्मीकरणे और णी प्रापणे- चार धातुओं से निष्पन्न हुआ है। अधिक विस्तार में न जाकर यहाँ अग्नि की संगति इस प्रकार लगा लीजिये कि सृष्टि के आदि में 'हिरण्यगर्भ' अग्नि और ज्योति का पुंज ही तो इस समस्त संसार का बृहत् शरीर था, उसी से अनन्त लोक-लोकान्तरों का प्रादुर्भाव हुआ।

इसके पश्चात् तीसरा विशेषण है अंगिरः। प्राणों का भी प्राण होने से उस अग्निरूप प्रभु को अंगिरः कहा गया। इसके नष्ट होने पर नाश अवश्यम्भावी परिणाम है, अतः उस प्रभु का मन्त्रोक्त अंगिरः नाम कितना यथार्थ है।

अब प्रश्न है- वह ऐसा प्रभु करता क्या है? उत्तर मिला- "भद्रं करिष्यसि"- वह प्राणिमात्र का कल्याण करता है।

विश्व के किसी प्राणी की शरीर की रचना, जो हमारे विचार में बेतुकी और बेढंगी लगती है, उस पर गम्भीरता से सोचेंगे तो आप निश्चय से इस परिणाम पर पहुँचेंगे कि उस प्राणी को उसकी सुविधा की दृष्टि से वैसा ही शरीर मिलना चाहिए था। इस प्रकार के शरीर के अभाव में वह अपनी जीवन-यात्रा चला ही नहीं सकता था। ऊँट का शरीर हमको और आपको बहुत टेढ़ा-मेढ़ा और बेतुका लगता है, किन्तु विचारिये कि ऊँट के ये लम्बे-लम्बे पैर तथा टेढ़ी और लम्बी गर्दन न मिली होती तो वह इतने ऊँचे-ऊँचे वृक्षों से अपना भोजन कैसे ग्रहण करता? यह तो रही साधारण कल्पना की बात कि मंगलमय प्रभु जीव मात्र का कल्याण करता है, किन्तु अक्षय कल्याण "दाशुषे" 'दानशील' का ही होता है। उसके भण्डार सदा भरपूर रहते हैं। सूर्य और चन्द्र रात-दिन अपने प्रकाश प्रदान करते हैं। क्या इस दान से उनमें कोई न्यूनता आई? समुद्र से बादल जल ग्रहण कर सारे भूमण्डल को आप्लावित करता है। क्या इस दान से समुद्र की जलराशि न्यून हुई? वस्तुतः संसार चक्र चलने का नियम ही यही है कि यहाँ आदान और प्रदान का चक्र घूमते रहना चाहिए। इसमें आया ठहराव संसार के विनाश का सूचक है।

प्रभु ने इस संसार को यज्ञ के साथ उत्पन्न किया है और वेद में उपदेश दिया है कि तुम यज्ञ के भाव और कर्म से ही फूल और फल सकते हो, यह यज्ञ ही तुम्हारी सब कामनाएँ पूरी करेगा। जड़-जगत् भी यज्ञ के आधार पर ही चल रहा है। महर्षि मनु ने लिखा है-

अग्नौ प्रास्ताहुतिस्तावदादित्यमुपतिष्ठते।
आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः।।

'अग्नि में डाली हुई आहुति आदित्य को पहुँचती है। सूर्य से बादल बनकर वर्षा होती है। वर्षा से अन्न उत्पन्न होता है और उस अन्न से जीवों का पालन-पोषण होता है।' यह चक्र यदि इसी प्रकार घूमता रहता है तो संसार ठीक चलता रहता है और जहाँ इसमें गतिरोध उत्पन्न होता है, वहीं अव्यवस्था उत्पन्न हो जाती है। यही बात संसार के व्यवहार-चक्र पर भी पूरी घटती है। हमारे प्रत्येक कार्य में समाज का सहयोग प्राप्त होता है, उसी प्रकार हमें भी दूसरों के कार्यों में अपनी शक्ति और क्षमता के अनुसार त्याग के लिए उद्यत रहना चाहिए। यदि अपना ही सुख और अपना ही हित देखा और इसी की प्रतिक्रिया दूसरों पर भी वैसी ही हुई तो यह संसार नरक बन जाएगा।

एक संस्कृत के कवि ने बहुत सुन्दर कहा है-

बोधयन्ति न याचन्ते भिक्षाचारा गृहे-गृहे।
दीयतां दीयतान्नित्यमदातुः फलमीदृशम्।।

'घर-घर माँगने के लिए घूमते भिखारी शिक्षा देते फिर रहे हैं, माँग नहीं रहे। क्या शिक्षा दे रहे हैं? हे संसार के सम्पन्न लोगों! जो तुम्हारे पास है, उसका नित्य दान करो! यदि नहीं दोगे तो तुम भी हमारी तरह घर-घर जाकर हाथ फैलाओगे।'

अतएव इस प्रकत मंत्र में "दाशुषे भद्रं करिष्यसि तव इत् तत् सत्यम्" प्रभु का अटल नियम है कि वह दाता का अक्षय कल्याण करता है।

("श्रुति सौरभ" से साभार)

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-६६

अयं कायाकल्पो भ्रमति सुमुनौ भारतभुवि
निरुद्धः पाखण्डप्रबलजडकोलाहल इह।
कथं त्वेको मर्त्यः सुनयति समाजं विगतिकं
विचारैः सोदेश्यैरिति तु हृदयं मे सुचकितम्।।

यह मुनि जैसे जैसे
भारत भूमि पर भ्रमण करता जाता है
इस देश का कायाकल्प होता जाता है।
पाखण्डों और जड़ताओं का
प्रबल कोलाहल
अचानक रुक गया है !!
ये देख कर मेरा मन चकित है कि
अकेला एक ही व्यक्ति
अपने उद्देश्य-पूर्ण विचारों से
गतिहीन समाज को भी
इतनी अच्छी तरह साथ लेकर
कैसे चल देता है?

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

स्वामी आत्मबोध सरस्वती की जयन्ती पर

सन्त दर्शन का प्रभाव

-चन्द्र प्रकाश शुक्ल

आर्य लोक वार्ता द्वारा समय समय पर प्रकाशित आत्मबोधांक, वैदिक धर्म आदि अनेक लेख, प्रवचन, संकलन द्वारा जिस महा विभूति से विगत कई वर्षों से हम प्रेरणा लेते रहे। परन्तु उसके निकट रहते हुए भी हमें उनसे भेंट करने का समय नहीं मिल पाया। यह मेरा सौभाग्य ही था कि अगस्त २००२ के प्रारम्भ से ही प्रातः ७.१५ पर नित्य प्रति नियमित दर्शन, आशीर्वाद मिलता रहा। दैव योग से इस अल्पावधि में मुझे ऐसा लगा कि मानों कभी अपरिचित ही नहीं थे। यह होता है- 'सन्तदर्शन का प्रभाव'। अकस्मात हम उनकी शरण में कैसे पहुंचे- संक्षेप में मैं प्रस्तुत करना चाहता हूं। उनके जीवन के अन्तिम समय के कुछ शब्द मुझे आशीर्वाद रूप में प्राप्त हुए वह मानो वर्षों की साधना में लगे या उनकी सेवा में निरन्तर लगे सेवक भी नहीं पा सके इसका मुझे गौरव है।

मेरा जन्म मेरे नाना के घर हुआ था। वहां आर्यसमाज मंदिर घर के सामने ही था जहां प्रत्येक रविवार को सामूहिक यज्ञ, नित्य संध्योपासन, मसिक अधिवेशन और समय समय पर उपदेशकों द्वारा वैदिक सत्य धर्म का ज्ञान व दीक्षा आदि का आयोजन होता रहता था। मेरे नाना व मामा सभी छोटे बड़े सब संध्या नियमानुसार करते रहते थे। इन्हीं के मध्य हमें महीनों रहने का अवसर मिलता रहता था अतः हमें दैनिक यज्ञ प्रकाश उस समय कण्ठस्थ सी हो गयी थी, जब मैं ५वीं कक्षा में ही था। इधर मेरे पिता जी व बाबाजी सनातन धर्मी थे। पुराण, भागवत तथा पांडित्य कर्मकांडी थे। शालिग्राम तथा अन्य मूर्तियों का पूजन भोग लगाकर ही भोजन किया जाता था। यह कार्य पिताजी के न होने पर मुझे भी करना पड़ता था। यह परम्परा हमारे परिवार में आज भी चली आ रही है। अचानक मेरा मन धूप, दीप आरती, मूर्तिपूजन से सन्तुष्ट नहीं हो पा रहा था या कहें असन्तुष्ट होकर भ्रमित रहने लगा। सही मार्ग पाने के लिए मैं बेचैन रहने लगा। मैंने सोंचा कि गुरु कर लूं और वानप्रस्थी दीक्षा ले लूं। मैं स्वामी जी के पास गया। बड़ी उलझन में समस्या बताई, स्वामीजी मौन रहे, कुछ बोले नहीं फिर इशारे से मैंने समझा कि शायद मौन हैं। अगले दिन प्रातः ७.३० पर फिर गया तो मौन के बारे में बताया और मुझसे पारिवारिक विवरण लिया और कहने लगे अभी उपयुक्त समय नहीं है। तुम नित्य यहां यज्ञशाला में आओ और प्रवचन अवश्य सुनो, पहले दीक्षा के योग्य बनो। मैंने अपने भ्रम के बारे में पूंछा -मुझ पर पिता का मार्ग और नाना के, दोनों मार्गों का प्रभाव है, मैं उभय स्थिति में फंसा हूं। वे बहुत कम बोलते थे परन्तु मुझे जिज्ञासु जानकर केवल दो ही शब्दों से मेरे प्रश्न का समाधान कर दिया। उन्होंने कहा, 'ये जो धूप आदि है यह तो एक विकल्प मात्र है असली कार्य तो यज्ञ है।'

मैंने उनके स्वास्थ्य के विषय में पूंछा तो बताया कि मुझे मधुमेह की शिकायत है। मैंने उनसे कहा कि दिव्ययोग से 'डायबिट' ला दें तो बोले कि वह तो मेरा शिष्य ही है। यह देखो -दवा रखी है। मेरे यहां शुद्ध शहद रखा था मैं थोड़ा शहद लेकर गया, बड़ी शान्ति से कहा-रख दो यह ही काफी है और लाने की आवश्यकता नहीं है। चूंकि मैं नित्य जाता था इसके लिए हमने उनकी आज्ञा ले ली थी क्योंकि उनका कहना था कि यहां तो पता नहीं कहां कहां के लोग आते ही रहते हैं, कम से कम बोलना भी अधिक हो जाता था। उनकी आज्ञा से यज्ञशाला जाने से पूर्व मैं केवल प्रणाम करके सीधा चला जाता था। मैंने सुना था कि फलों में जामुन मधुमेह में फायदा करता है। मैं जबतक जामुन रही, रोज ले जाता था और उनकी मेज पर रख देता। एक दिन उन्होंने कहा कि अभी है, आज मत लाना। अगले दिन कहा कि 'थोड़ा कम लाया करो। यह तो मैं खा लेता हूं पर

शेष पृष्ठ 7 पर...

(पृष्ठ 1 का शेष.....)

अब्दुल्लाह गांधी.....

को बड़े बड़े सपने दिखाए गये। गाँधी जी ने तो लिखा ही था कि जो सबसे बड़ी बोली लगायेगा हीरालाल उसी का धर्म ग्रहण कर लेगा। हीरालाल के अब्दुल्लाह बनने के समाचार को बड़े जोर-शोर से मुस्लिम समाज द्वारा प्रचारित किया गया। ऐसा लगता था जैसे कोई बड़ मोर्चा उनके हाथ आ गया हो। हीरालाल को आसानी से रूपया मिलने के कारण उसकी हालत बद से बदतर हो गई। उनको मुसलमान बनाने के पीछे यही उद्देश्य कदापि नहीं था कि उनके जीवन में सुधार आये, उनकी गलत आदतों पर अंकुश लग सके परन्तु गाँधी जी को नीचा दिखाना था, हिन्दू समाज को नीचा दिखाना था उन्हें इस्लाम ग्रहण करने के लिए प्रेरित करना था। अपने नये अवतार में हीरालाल ने अनेक स्थानों का दौरा किया एवं अपनी तकरीरों में इस्लाम और पाकिस्तान की वकालत की। उन्होंने एक सभा में भाषण देते हुए कहा 'अब मैं हीरालाल नहीं बल्कि अब्दुल्ला हूँ। मैं शराब छोड़ सकता हूँ लेकिन इसी शर्त पर कि बापू और बा दोनों इस्लाम कबूल कर लें'

आर्य समाज द्वारा कस्तूरबा गाँधी की अपील पर हीरालाल को समझाने के कुछ प्रयास आरम्भ में हुए। पर नये नये अब्दुल्लाह बने हीरालाल ने किसी की नहीं सुनी। पर कहते हैं झूठ के पाँव नहीं होते, जो विचार सत्य पर आधारित न हो, जिस विचार के पीछे अनुचित उद्देश्य शामिल हो वह विचार सुदृढ़ एवं प्रभावशाली नहीं होता। ऐसा ही कुछ हीरालाल के साथ हुआ। हीरालाल की रातें या तो नशे में व्यतीत होतीं अथवा नशा उतरने के बाद उनकी आँखों के सामने उनकी बूढ़ी माँ कस्तूरबा का पत्र उन्हें याद आने लगा जिससे उनका मन व्यथित रहने लगा।

उस काल में हिन्दू-मुस्लिम दंगे सामान्य बात थी। एक बार कुछ मुसलमान उन्हें एक हिन्दू मंदिर तोड़ने के लिए ले गये और उनसे पहली चोट करने को कहा। उन्हें उकसाते हुए कहा गया कि या तो सोमनाथ के मंदिर पर मुहम्मद गोरी ने पहली चोट की थी अथवा आज इस मंदिर पर अब्दुल्लाह की पहली चोट होगी। कुछ समय तक चुप रहकर, सोच विचार कर अब्दुल्लाह ने कहा कि जहाँ तक इस्लाम का मैंने अध्ययन किया है मैंने तो इस्लाम की शिक्षाओं में ऐसा कहीं नहीं पढ़ा कि किसी धार्मिक स्थल को तोड़ना इस्लाम का पालन करना है और किसी भी मंदिर को तोड़ना किसी ज्वलंत समस्या का समाधान है। हीरालाल के ऐसा कहने पर उसके मुस्लिम साथी नाराज होकर चले गये और उनसे किनारा करना आरम्भ कर दिया।

श्रीमान जकारिया साहब जिन्होंने हीरालाल को अब्दुल्लाह बनने के लिए अनेक वायदे किये थे, की तो बात करने की भाषा ही बदल गई। जो मुसलमान हीरालाल को बहकाकर अब्दुल्लाह बना लाये थे वे अपने मनसूबे पूरे न होते देख उन्हें ही लानत देने लगे।

आखिर उन्हें गाँधी जी का वह कथन समझ में आ गया कि हीरालाल को अब्दुल्लाह बनाने से इस्लाम का कुछ भी फायदा होने वाला नहीं है। अब्दुल्लाह का मन अब वापिस हीरालाल बनने को कर रहा था परन्तु अभी भी मन में कुछ संशय बचे थे। इतिहास की अनोखी करवट देखिये कि गाँधी जी ने आर्य समाज के शुद्धि मिशन की जहाँ खुले आम आलोचना की थी उन्हीं गाँधीजी के पुत्र हीरालाल को आर्यसमाज की शरण

शेष पृष्ठ 4 पर...

वाचवालय से

'पाक में मुसलमान होने का दावा करने वाला अहमदी डॉक्टर गिरफ्तार' शीर्षक समाचार देते हुए **'दैनिक जागरण'** लिखता है कि पाकिस्तान में अल्पसंख्यक अहमदी समुदाय के एक डॉक्टर को कथित तौर पर मुसलमान होने का दावा करने पर गिरफ्तार किया गया है। उसकी गिरफ्तारी रोगियों की शिकायत पर ईशनिन्दा कानून के तहत की गयी है।

लाहौर में एक अतिरिक्त जिला व सत्र न्यायाधीश ने ७२ वर्षीय ब्रिटिश पाकिस्तानी डॉक्टर मसूद अहमद की गिरफ्तारी के बाद जमानत याचिका को खारिज कर दिया। उसे कथित तौर पर अहमदी विचारों का उपदेश देने, अपमान जनक टिप्पणी से युक्त किताबों का वितरण करने के मामले में गिरफ्तार किया गया था।

जमायत अहमदिया पाकिस्तान के प्रवक्ता के मुताबिक, डॉक्टर के पास दो लोग रोगी बनकर गये थे और उन्होंने गोपनीय तरीके से उनके कुरान पढ़ने को रिकार्ड किया था। डॉक्टर मसूद पाकिस्तान में फार्मेसी खोलने के लिये १९८२ में ब्रिटेन से लौटे थे।

गौरतलब है कि मौलवियों के दबाव में प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो ने १९७४ में संवैधानिक संशोधन किया था, जिसके तहत अहमदी समुदाय के लोगों को गैर मुस्लिम घोषित किया गया था।

'दैनिक जागरण' में ही प्रकाशित एक अन्य समाचार के अनुसार ब्रज क्षेत्र के डेढ़ सौ मुस्लिम परिवारों ने हिन्दू धर्म में वापसी की।...एटा के आर्ष गुरुकुल में कार्यक्रम पुरोहितों ने १५० मुस्लिम परिवारों के ३२५ सदस्यों को वेद मंत्रोच्चारण के साथ हिन्दू धर्म की दीक्षा दी।...जिन लोगों ने हिन्दू धर्म अपनाया है, वे एटा के अलावा कासगंज, बरेली, बदायूं, पीलीभीत, शाहजहांपुर, फीरोजाबाद, हाथरस, मैनपुरी और भरतपुर के रहने वाले हैं।...इन १५० परिवारों में कई ऐसे भी हैं जिनके नाम हिन्दी शैली पर थे, मगर रीति रिवाज इस्लाम के मुताबिक थे।

'क्रिसमस पर पांच हजार लोगों का हिन्दू धर्म में वापसी का दावा' करने वाला समाचार दैनिक **'नवभारत टाइम्स'** ने प्रकाशित किया है। पत्र के अनुसार अलीगढ़, एटा, मैनपुरी, आगरा, कासगंज, हाथरस, बरेली, फिरोजाबाद, बिजनौर, शाहजहांपुर के लोगों को पुनः हिन्दूधर्म में लाने के लिये धर्मरक्षा यज्ञ आयोजित किये गये। इस कार्यक्रम में मेयर इन्द्रजीत आर्य मौजूद थे। बरेली में आर्य समाजी स्वामी यशस्वी आर्य ने धर्म वापसी करने वालों पर गंगाजल छिड़का और जनेऊ पहनाया। हजारों लोगों ने यज्ञ में भाग लिया जिन्हें दीक्षा, रोजगार, व अन्य प्रलोभन देकर ईसाई बना लिया गया था। कई गांवों में लोगों ने अपने घरों पर लगे क्रास हटाकर पुनः हिन्दू बनने का स्वेच्छा से फैसला किया।

'अंगोला इस्लाम को प्रतिबंधित करने वाला पहला देश' शीर्षक समाचार **'द टाइम्स ऑफ इज़राइल'** ने प्रकाशित किया है। पत्र के अनुसार नवम्बर माह में अंगोला ने इस्लाम को प्रतिबन्धित करने की कार्यवाही की है। अनेक मस्जिदें गिरा दी गयीं और अनेक अगली सूचना तक के लिए बन्द कर दी गयीं। मोरक्को के समाचार पत्र 'ला नावेल ट्रिब्यून' ने अंगोला के संस्कृति मंत्री रोसा क्रूज़ को यह कहते हुए उद्धरित किया है कि 'न्याय और मानवाधिकार मंत्रालय' ने इस्लाम के वैधानिकीकरण की प्रक्रिया को मान्यता प्रदान नहीं की है। नाइज़ीरिया के अखबार 'ओशन डिफेण्डर' ने लिखा है कि अंगोला के राष्ट्रपति के कथनानुसार अंगोला में इस्लाम के प्रभाव का यह निर्णायक अन्त है। ज्ञातव्य है कि अंगोला में २-३ प्रतिशत मुस्लिम हैं, जो पश्चिमी अफ्रीका और लेबनान के आव्रजक हैं। माना जा रहा है कि अफ्रीकी देशों में इस्लाम के बढ़ते प्रभाव और 'वेस्ट गेट मॉल' (केन्या) जैसी आतंकवादी घटनाओं को देखते हुए अंगोला ने इस्लाम को वैधानिक मान्यता देने से पैर पीछे खींच लिये हैं। अंगोला सरकार ने कहा है कि उग्र इस्लाम का हमारा देश स्वागत कतई नहीं कर सकता।

वैज्ञानिक जगत में यह प्रसिद्ध है कि पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति का सर्व प्रथम आविष्कार अंग्रेज वैज्ञानिक सर आइजक न्यूटन ने १६६८ में किया। उन्हें यह ध्यान नहीं कि न्यूटन से लगभग पांच सौ वर्ष पूर्व भारत के महान खगोल शास्त्री भास्कराचार्य ने पृथ्वी में विद्यमान गुरुत्वाकर्षण की खोज की थी और अपने इस सिद्धान्त का विवेचन स्वग्रन्थों में किया था। **'सत्यार्थ सौरभ'** मासिक में (उदयपुर) में प्रकाशित डॉ.भवानीलाल भारतीय के लघु लेख 'गणितज्ञ तथा खागोल शास्त्री : भास्कराचार्य' में भारत के इस पुरातन वैज्ञानिक की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया गया है। डॉ.भारतीय लिखते हैं कि यद्यपि इनके काल में दूरबीन जैसी किसी उपक्रम का आविष्कार नहीं हुआ था पुनरपि भास्कराचार्य ने सुदूरवर्ती ग्रह नक्षत्रों की गति आदि का अध्ययन स्वाविष्कृत विधियों से किया था, जो सचमुच आश्चर्य का विषय है। तारामण्डल तथा आकाशगंगा के रहस्यों के अध्ययन में जब वे तल्लीन हो जाते, तो उन्हें भोजन विश्राम की सुध बुध नहीं रहती थी।...निश्चय ही भारतीय ज्योतिष तथा गणित के अध्ययन में भास्कराचार्य का योगदान चिरस्मरणीय है।

'समलैंगिकतावाद' के विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट के साहसिक निर्णय और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की समलैंगिकतावाद की पक्षधरता पर केन्द्रित धर्मपाल आर्य का विचारोत्तेजक लेख **'दयानन्द संदेश'** मासिक (दिल्ली) ने प्रकाशित किया है। धर्म पाल आर्य लिखते हैं कि इस प्रकरण में कांग्रेस बिल्कुल बेपर्दा हो गयी है। इसकी अध्यक्षा सोनिया गांधी ने तथा युवराज राहुल गांधी ने सुप्रीम कोर्ट के निर्णय पर निराशा व्यक्त की। श्रीमती गांधी ने कहा कि इस मसले को संसद सुलझायेगी, ऐसी उम्मीद है। राहुल गांधी ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले को लोगों के स्वतंत्र जीवन में दखल बताया। इन दोनों के बयान के बाद केन्द्र ने उक्त निर्णय के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में पुनः याचिका दायर करने का निर्णय ले लिया।...पूरी कांग्रेस पार्टी और सरकार समलैंगिकों के साथ खड़ी है।...इससे इस पार्टी का चारित्रिक दिवालियापन ही उजागर होता है।

शुभाकांक्षा

'आर्य लोक वार्ता' दिसम्बर २०१३ अंक मिला। डॉ.विवेक आर्य का लेख 'हीरा लाल से अब्दुल्लाह, फिर...हीरालाल हुए महात्मा गाँधी के पुत्र' शीर्षक पढ़कर चौंक गया। इससे जहाँ सर्वथा, नयी जानकारी मिली महात्मा गाँधी जी के आर्य समाज सम्बन्धी विचारों की, वहीं उनके दृष्टिकोण परिवर्तन का सत्याधार भी उद्घाटित हो गया। उन्हें भी आर्य समाज के सत्यार्थ का प्रकाश उपलब्ध हो गया और इससे आर्य समाज की महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक देन में एक नया अध्याय जुड़ गया। ऐसी सामग्री की प्रस्तुति आपकी अनुसधित्सु -प्रज्ञा का सुपरिणाम है। 'मेरी चार धाम यात्रा' शीर्षक आपका सम्पादकीय तो आपके प्रत्युत्पन्न-मतित्व के साथ ही उर्वर कल्पना समन्वित उदात्त-बोध से ही संपृक्त है। निस्सन्देह 'गुरु-निष्ठा' की दृढ़ता से बढ़कर कहीं कुछ नहीं। मेरा भी मन पुनीत हो उठा और एक आध्यात्मिक पवित्र्य युक्त धन्यता का अनुभव करने लगा। सोचता हूँ कि ऐसा वरेण्य संसर्ग तो अनेकानेक पुण्यों का फल है, तभी आपने मुझे भी सहभागी होने का गौरव दिया। इस सुन्दर मनोरम यात्रावृत्तात्मक संस्मरण के लिए हार्दिक बधाई। ऐसे लेख साहित्य की महत्त्वपूर्ण निधि सिद्ध होंगे।

इस अंक में प्रकाशित सामग्री भी, अन्य अंकों की भाँति ही उच्चस्तरीय, विचारोत्तेजक, सरस और सद्मार्ग की प्रेरक है। पं.शिवकुमार शास्त्री कृत 'वेदांजलि', डॉ.शान्तिदेव बाला कृत 'जीवन जीने का वास्तविक सूत्र' लेख बड़े महत्त्वपूर्ण हैं। 'वेद ही ईश्वर ज्ञान है' शीर्षक ग्रंथ-परिचय पढ़कर उसकी महत्ता पर अच्छा प्रकाश पड़ता है, उसकी पठनीयता अपेक्षित जान पड़ती है। सर्वश्री गौरीशंकर वैश्य, मिर्ज़ा हसन नासिर, कैलाश निगम एवं उमेश राही की कविताएँ विशेष प्रीतिकर लगीं। 'विनय पीयूष' का तो कहना ही क्या? कुल मिलाकर 'आर्य लोक वार्ता' जैसा मासिक पत्र अन्य नहीं। अनेकशः साधुवाद।

-उमाशंकर शुक्ल 'शितिकिण्ठ'
'वाणी निलय' ७८, त्रिवेणी नगर, प्रथम, डालीगंज रेलवे क्रासिंग, लखनऊ-२२६०२०

***

'आर्य लोक वार्ता' के नवम्बर अंक के प्रथम पृष्ठ पर 'दयानन्द सरस्वती का जीवन दीप बुझ गया' आर्य समाज मेरठ ने जन समुदाय के अवलोकनार्थ दुखद समाचार के कुछ अंशों को प्रस्तुत कर श्रद्धांजलि अर्पित की। बहुत ही सराहनीय कार्य किया है क्योंकि अधिकांश पाठक व पाठिकाओं को ऐसी जानकारी नहीं थी। 'सम्पादकीय' में 'भविष्य की अगवानी' का सुन्दर द्रष्टान्त देकर स्पष्ट किया कि नरेन्द्र मोदी ही वास्तव में प्रधानमंत्री के अधिकारी दृष्टिगत होते हैं। उनके वक्तव्य में स्थिरता झलकती है। 'वेदांजलि' में दूरद्रष्टा पं.शिवकुमार शास्त्री जी ने अपने देश की जनता को जाग्रति का सन्देश दिया है। सराहनीय प्रयास है। आचार्य दीपंकर जी ने स्पष्ट किया कि स्वतंत्रता संग्राम के सहयोगी जितने भी थे सभी वैदिक विचारधारा से परिपूर्ण थे। 'वाचनालय से' द्वारा अमृत खरे जी खोजपूर्ण तथ्य प्रकाश में लाये हैं। आनन्द कुमार जी का 'मनुष्य का विराट रूप' विशेष शिक्षाप्रद है। आचार्य ओजोमित्र शास्त्री ने आर्य लोक वार्ता की विशेषताओं पर प्रकाश डाला है जो सराहनीय कदम है। आर्य लोक वार्ता ऐसी पत्रिका है जो हमें सभी पाठक पाठिकाओं को घर बैठे एक दूसरे के विचारों से अवगत कराती है। विचारों से सहमति प्राप्त कराती है यह अच्छा खासा स्वाध्याय है और हमारा पथ प्रशस्त करती है। अतः मैं चाहूंगी यह पत्रिका दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की करे और हम सबका सतत पथ प्रशस्त होता रहे।

-प्रमोद कुमारी
एम.एस.३७, सेक्टर डी, अलीगंज, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' दिसम्बर '१३ अंक में प्रस्तुत सामग्री का अवलोकन करके मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई। इतनी उच्च स्तरीय तथा सामाजिक सुधार की भावना को प्रेरित करने वाली पठनीय सामग्री शायद ही कहीं देखने को मिलती होगी। सम्पादकीय लेख, काव्यायन, वेदमंत्र का काव्यानुवाद, जिज्ञासा और समाधान तथा मुखपृष्ठ पर प्रकाशित लेख- सभी कुछ महत्त्वपूर्ण है। मेरे लिए यह विशेष हर्ष की बात है कि यह पत्र मेरे गुरुवर प्राध्यापक डॉ. वेद प्रकाश आर्य, पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, जे.एन.एम.पो.ग्रे.कालेज, बाराबंकी द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित हो रहा है। पत्र की उन्नति के लिए मैं अपनी शुभकामनायें व्यक्त करता हूँ। *-रामनरेश रावत*
पूर्व विधायक, गैस एजेंसी, त्रिलोकपुर, बाराबंकी

***

'आर्य लोक वार्ता' नवम्बर २०१३ अंक को अपने स्वभाव से ध्यान पूर्वक पढ़ा क्योंकि ज्ञान अर्जित करना ही हमारा मुख्य उद्देश्य होना चाहिए- वैदिक धर्म के मानने वाले के लिए और भी अनिवार्य है कि दिन प्रतिदिन इस ओर प्रगति करे। सत्संग-स्वाध्याय ही हमें इस ओर आगे बढ़ाते हैं- इस भाव से आपकी पत्रिका द्वारा प्रतिमास हम ज्ञानवर्धन कर आगे बढ़ रहे हैं। मुख्य पृष्ठ पर ऋषि के निर्वाण दिवस को आर्य जगत ने इस समाचार को कैसा लिया उसकी झलक 'आर्य समाचार' पत्रिका के प्रकाशित संपादित अंश से मिली-उन्होंने जहान फानी से रहमत फरमाई- इस वियोग के गम को आर्य जगत ने कैसे महसूस किया जो आज तक हमारे दिलों को आहत कर रहा है अर्थात् स्वामी जी के अभ्युदय से हामारा अंधविश्वास और अंधकार मिट गया। आज हम ईश्वर के असली स्वरूप को जानने के योग्य हो गये। इस लेख के प्रकाशन से कितना आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ है, उसके लिए अतिधन्यवाद करता हूँ।

आपका सम्पादकीय पढ़ने से वर्तमान में क्या हो रहा है, यह दर्शाता है। अतः क्या सत्य है, क्या विपरीत- ऐसा आपके सम्पादकीय से पता चलता है क्योंकि राजनीतिक विचार हमारे देश को दिशा निर्देश देते हैं। आपने देश के वित्त मंत्री और प्रदेश के मुख्यमंत्री का उल्लेख कर वास्तविकता को प्रकट किया है। आगे प्रधानमंत्री कौन होना चाहिए, कौन भला कर सकता है- आपके विचार अमूल्य हैं। पं.शिवकुमार शास्त्री का 'वेदांजलि'- कौन देश को महान स्वाधीन रख सकता है- मंत्र के द्वारा इसका मार्ग दर्शन और उपाय बताकर हमें गदगद कर दिया। सत्य का पालन करना, पुरुषार्थ करना, सरल और निश्छल व्यवहार करना, वीर होना, दण्ड की सुन्दर व्यवस्था, दिशा-नीति का उचित प्रयोग करना, धार्मिक और आस्तिकता का भाव रखना और अन्त में यज्ञ अर्थात् मिलकर देश के लिए काम करना। उपरोक्त की विस्तार से जानकारी हमें देशभक्ति का उपदेश देकर शास्त्री जी ने हमारी आँखें खोल दीं। शेष पत्रिका में सब उत्तम है। उन सब लेखकों का भी हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। अन्त में आपको भी हार्दिक साधुवाद जिसके कारण से यह सब ज्ञान प्राप्त हो रहा है। *-मदन मोहन जोशी*

११७, पटेल नगर, आलमबाग, लखनऊ

***

वैदिक वाङ्मय से ओतप्रोत आर्य लोक वार्ता दिसम्बर अंक को संस्पर्शित किया। हीरालाल से अब्दुल्लाह तथा पुनः अब्दुल्लाह से हीरालाल हुए महात्मा गांधी के पुत्र के साथ हुई घटना ने चमत्कृत कर दिया। आर्य समाज के इस क्रान्तिकारी अनुष्ठान से यह तथ्य सत्य सिद्ध है कि विश्व कल्याण के लिए आर्ष व्यवस्था ही सर्वोत्तम है। आलोचक होते हुए भी महात्मा गांधी ने आर्य समाज की वेदोक्त शक्ति को स्वीकार किया। 'वाचनालय से' स्तम्भ के माध्यम से भी अमृत खरे सूत्रवत चिन्तन प्रदान करते हैं। इस बार मुजफ्फरनगर दंगे का सच तथा गौहत्या सम्बन्धी मुस्लिम समुदाय की व्यवहारिक अज्ञानता के उद्घाटन ने उद्वेलित किया। 'विनय पीयूष' में भावपूर्ण काव्यानुवाद प्रभावपूर्ण है। सतत ज्ञान की अभिवृद्धि हेतु उन्हें साधुवाद। 'मेरी चार धाम यात्रा' सम्पादकीय के अनन्तर माता तुल्य गुरु भार्या का पुण्यस्मरण मानस को स्नेहसिक्त कर गया। आपकी ललित निबन्धात्मक शैली अत्यंत रुचिकर लगी। डॉ.शान्तिदेव बाला का विवेकानन्द की १५०वीं जयन्ती विषयक आलेख समीचीन तथा प्रेरक है। 'काव्यायन' की रचनाएँ सशक्त, संदेशप्रद एवं समसामयिक हैं। आप सभी को आंग्ल नववर्ष की मंगल कामनाएँ। वर्ष २०१४ जनमानस के लिए सुख शान्ति प्रदाता सिद्ध हो।

जाति-धर्म के बन्धन तोड़ो, कहते शाश्वत वेद।
एक ईश की सन्तानें सब, मान रहे क्यों भेद?
सारे जग को आर्य बनाओ, त्यागो मिथ्यादम्भ,
जन-गण-मन जागृति से ही, हैं मिट सकते विभेद।।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
११७, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

***

दिसम्बर माह का आर्य लोक वार्ता पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'मेरी चार धाम यात्रा' का प्रतीकात्मक वर्णन हृदय स्पर्शी लगा। गुरुपत्नी माता के समान होती ही होती है, ऐसी परम्परा अपने भारत वर्ष में ही सम्भव है। आपकी सांस्कृतिक संचेतना सम्माननीय तथा अनुकरणीय है। महात्मा गांधी के पुत्र हीरालाल का मुस्लिम धर्म अपना लेना और पुनः हिन्दू धर्म में लौट आना अत्यंत हृदय द्रावक है। ऐसी जानकारी सही दिशा देने वाली है। ऊपर से भले ही महात्मा गांधी आर्य समाज के आलोचक रहे हों किन्तु स्वतंत्रता संग्राम एवं समाज सुधार के अनेक कार्यक्रमों में वे स्वामी दयानन्द के चिन्तन दर्शन से प्रभावित रहे। 'वेदांजलि', 'सत्यार्थ प्रकाश वार्ता', 'जिज्ञासा और समाधान' आदि स्तम्भों में ज्ञानवर्धक सामग्री प्राप्त होती है। 'शुभाकांक्षा' और 'काव्यायन' तो अद्वितीय पृष्ठ हैं। उनको पढ़कर मन आनन्दित हो जाता है।

नया वर्ष मंगलमय होवे, कहती सविता 'वाणी'।
श्रम-निष्ठा से जुटें कार्य में, सुख पावे हर प्राणी।

-सविता वाणी
गौरी गंज, जनपद-अमेठी

***

मैं बचपन से सुनती आ रही थी कि लाला लाजपत राय ने अपनी बहन की शादी मेरे दादा जी श्री राजाराम के भाई श्री रामचन्द्र सहाय के साथ वैदिक रीति से कराई थी। लाला लाजपतराय ने सिसौली ग्राम में आर्य समाज मन्दिर की स्थापना कराई थी। मेरे ताऊ श्री त्रिलोकीनाथ जी पक्के आर्य समाजी थे व नित्य यज्ञ किया करते थे।

'आर्य लोक वार्ता' के दिसम्बर १३ अंक में महात्मा गांधी के पुत्र हीरालाल से अब्दुल्लाह फिर अब्दुल्लाह से हीरालाल हुए- हमारे लिए एकदम नया समाचार था। आर्य जी का सम्पादकीय 'मेरी चार धाम यात्रा' का आंखों देखा हाल मन को छू लेने वाला है- लगता है कि जैसे हम ही विमान यात्रा कर रहे हैं। 'जिज्ञासा और समाधान' में 'स्विष्टकृत' मंत्र का बहुत ही सुन्दर रूप से समाधान किया गया है। 'मनुष्य का विराट रूप' में महाकवि माघ की दानशीलता देखते ही बनती है। धन्य हैं सम्पादक जी जो हमें पत्रिका द्वारा इतना ज्ञान प्राप्त करा रहे हैं।

-कमलेश पाल
एम.एस.१२०, सेक्टर डी, अलीगंज, लखनऊ

***

नवम्बर २०१३ का 'आर्य लोक वार्ता' का ज्ञानवर्धक अंक प्राप्त हुआ। पढ़कर आत्म सन्तोष की अनुभूति हुई। महर्षि दयानन्द के निधन के समाचार के सम्पादित अंश ने हृदय को झकाझोर दिया। सम्पादकीय अंश तत्कालीन कवि भूषण की रचनाओं के साथ अत्यन्त रोचक लगा। आचार्य दीपंकर द्वारा स्वतंत्रता संग्राम और आर्य समाज का समन्वय रूप दृष्टिगत हुआ। आचार्य पं.ओजोमित्र शास्त्री जी ने 'आर्य्य लोक वार्ता' की विशेषताओं को खूबसूरती के साथ लिखा है। 'काव्यायन' में गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' का 'दयानन्द गुणगान' विशेष हृदय स्पर्शी रहा। कवि उमाशंकर शुक्ल, डॉ.कैलाश निगम, उमेश राही, डॉ.मिर्जा हसन नासिर, रमा आर्य 'रमा' की कविताओं से ज्ञान अर्जित हुआ। संक्षेप में यूँ कहें कि आर्य लोक वार्ता में भारतीय संस्कृति की पूरी झलक दृष्टिगोचर होती है।

-दिनेश मिश्र 'राही'
अम्बिका पुरम, आनन्द नगर, सीतापुर

***

(पृष्ठ 3 का शेष.....)

अब्दुल्लाह गांधी.....

में वापिस हिन्दू धर्म में प्रवेश के लिए, अपनी शुद्धि के लिए आना पड़ा था। आर्यसमाज बम्बई के विजयशंकर भट्ट द्वारा वेदों की इस्लाम पर श्रेष्ठता विषय पर दिये गये दो व्याख्यानों से उनके मन में बचे हुए बाकी संशयों की भी निवृत्ति हो गई। जिन हीरालाल को मुसलमानों ने तरह तरह के लोभ और वायदे किये थे उन्हीं हीरालाल को बिना किसी लोभ अथवा प्रलोभन के, बिना किसी झूठे वायदे के अब्दुल्लाह से हीरालाल वापिस बनाया गया।

बम्बई में खुले मैदान में हजारों की भीड़ के सामने, अपनी माँ कस्तूरबा और आपने भाइयों के समक्ष आर्य समाज द्वारा अब्दुल्लाह को शुद्धकर वापस हीरालाल गाँधी बनाया गया। अपने भाषण में हीरालाल ने उस दिन को अपने जीवन का सबसे स्वर्णिम दिन बताया। उन्होंने कहा कि धर्म का सत्य अर्थ केवल उनकी मान्यताएँ भर नहीं अपितु उसके मानने वालों की संस्कृति, शिष्टता और सामाजिक व्यवहार पर उसका प्रभाव भी है। इस्लाम के विषय में अपने अनुभवों से मैंने यह सीखा है कि हिन्दुओं की वैदिक संस्कृति एवं उसको मानने वालों की शिष्टता और सामाजिक व्यवहार इस्लाम अथवा किसी भी अन्य धर्म से ज्यादा श्रेष्ठ है। इतना ही नहीं इस्लाम में पाई जाने वाली सत्यता हिन्दू संस्कृति की ही देन है। जिन मुसलमानों के मैं संसर्ग में आया वे इस्लाम की मान्यताओं से ठीक विपरीत व्यवहार करते हैं। इसलिए अब मैं इस्लाम को इससे अधिक नहीं मान सकता और अब वहीं आ गया हूँ जहाँ से मैंने शुरूआत की थी। अगर मेरे इस निश्चय से मेरे माता-पिता, मेरे भाइयों, मेरे सम्बन्धियों को प्रसन्नता हुई है तो मैं उनका आशीर्वाद चाहूँगा। अंत में मैं उनसे क्षमा माँगता हूँ और उनसे मेरा सहयोग करने की विनती करता हूँ। हीरालाल वैदिक धर्म का अभिन्न अंग बनकर भारतीय श्रद्धानन्द शुद्धि सभा के सदस्य बन गये और आर्य समाज के शुद्धि कार्य में लग गये। दिसम्बर १९३६ के सार्वदेशिक अखबार के सम्पादकीय में महात्मा नारायण स्वामी लिखते हैं-

अब्दुल्लाह से हीरालाल

महात्मा गाँधी के ज्येष्ठ पुत्र हीरालाल गाँधी अब अब्दुल्लाह नहीं है। आर्य समाज मुम्बई में वे शुद्ध करके प्राचीनतम आर्यधर्म में वापिस ले लिए गये है। हिन्दू धर्म का पत्यिाग करने में उन्होंने जो भूल की थी, उसे अनुभव करके और प्रकाश रूप में उसको स्वीकार करके उन्होंने अच्छा ही किया है। उनका उदाहरण भाषा वेश में परिवर्तन करने वालों के लिए एक अच्छा उदाहरण है। हीरालाल को हिन्दू धर्म के प्रति जो उन्होंने अपराध किया है उसका प्रायश्चित करना बाकी रह जाता है। उन्हें चाहिए कि वे वैदिक धर्म के सुसंस्कृत रूप का अध्ययन करें और अपने जीवन को उसके सांचे में ढालें। यही उस अपराध का उत्तम प्रायश्चित है। जो मुसलमान हीरालाल को इस्लाम के दायरे में बहुमूल्य वृद्धि समझे बैठे थे और जो उनके सुधार की चेष्टा के बजाय उन्हें इस्लाम में प्रोपेगंडा का साधन बनाये हुए थे वे गलती पर थे और इस्लाम असेवा कर रहे थे, वह यह बात यह घटना स्पष्ट करती है और धर्म परिवर्तन करने वाली अन्य संस्थाओं को भी अच्छी शिक्षा प्रदान करती है।

महात्मा गाँधी अपने पुत्र को वापस पाकर अत्यंत प्रसन्न हुए थे और सार्वजनिक रूप से चाहे उन्होंने स्वामी दयानन्द को शुद्धि की प्राचीन व्यवस्था को फिर से पुर्नजीवित करने श्रेय भले ही न दिया हो परन्तु उनकी मनोवृत्ति से यह भली प्रकार से स्पष्ट हो जाता है कि आर्य समाज के आलोचक होते हुए भी उन्हें सहारा तो स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों का ही लेना पड़ा था। *('आर्य संदेश' से साभार)*

धारावाहिक-(40)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

जो हिन्दू मरे लोगों को अन्न-जल से तृप्त करता है, वह जीवितों को क्यों न करेगा? दान-प्रवृत्ति के प्रोत्साहन के लिए ही, संभवतः, प्राचीन मनोवैज्ञानिकों ने इस कर्म की व्यवस्था बाँधी है। दान ही के लिए बड़े-बड़े यज्ञ किये जाते थे। शास्त्रों ने यज्ञ-शेष अन्न को ही अमृत माना है। जो दूसरों को खिलाकर खाता है, उसे अमृताशी कहते हैं। समाज संस्थापकों ने सबाके अमृताशी बनने का उपदेश दिया है। जिस राम-राज्य को हम लोग अपना आदर्श राज्य मानते हैं, उसकी एक विशेषता यह भी है कि उसमें 'दान करो और स्वयं भी भोगो' का उपदेश कभी बन्द नहीं होता था- 'अव्युच्छिन्नोऽभवद्राष्ट्रेदीयतां भुज्यतामिति' -ब्रह्मपुराण।

दान को ही धर्म कहा गया है- 'दानं धर्मः'-कौटिल्य। उसी का नाम पुण्य है। दान का महत्त्व दानी की सामाजिक प्रतिष्ठा से समझा जा सकता है। वेद कालीन विद्वान् भी यही मानते थे कि दानी अमर पद पाते हैं-'दक्षिणावन्तो अमृतं भजन्ते'-ऋग्वेद। जिन देवताओं की हम वन्दना करते हैं, उनका प्रधान लक्षण यही तो है कि वे वरदान देते हैं। वे वरदान न देते तो उनका पूजना तो दूर रहा, कोई उन्हें पूछता भी नहीं। देवतापन दान से सिद्ध होता है। भगवान् को भी लोग इसीलिए भजते हैं कि उन्होंने अपनी विभूतियों को सर्व सुलभ कर दिया है। वे दीनबन्धु, करुणासिंधु, मुक्तिदाता हैं। मनुष्यों में भी पुण्यवान, नृदेव वही माने जाते हैं जो परोपकारार्थ कुछ देते रहते हैं। उसी का जीवन सफल माना जाता है जो नित्य परोपकार में प्रवृत्त रहता है-'जीवितं सफलं तस्य यः परार्थोद्यतः सदा'-ब्रह्मपुराण। महापण्डित व्यास का मत है कि सज्जनों की सम्मति में वे ही लोग सभ्य पुरुष माने जाते हैं जो दानी, अपने आश्रितों के भाग को न्यायपूर्वक अर्पण करने वाले, दीनजनों पर अनुग्रह करने वाले....और सब प्राणियों के प्रति दयालु होते हैं-

दातारः संविभक्तारो दीनानुग्रहकारिणः।
सर्वभूतदयावन्तस्ते शिष्टाः शिष्टसम्मताः।।
-वनपर्व

सज्जन का यह लक्षण है कि वे सदा दया करने वाले और करुणाशील होते हैं-'सर्वत्र च दयावन्तः सन्तः करुणवेदिनः' -वनपर्व। मार्कण्डेय पुराण के मत से- जो व्यक्ति याचकों, मित्रों तथा शत्रुओं से कभी विमुख नहीं होता, उसी से पिता वस्तुतः पुत्रवान् और माता वीरप्रसविनी मानी जाती है-

अर्थिनां मित्रवर्गस्य विद्विषां च पराङ्मुखम्।
यो न याति पिता तेन पुत्री माता च वीरसूः।।
-मार्कण्डे पुराण

माता को जन्मदा होने के कारण ही तो गौरव मिलता है। इसी प्रकार गुरु के गौरव का कारण है उसका ज्ञान-दान। वास्तव में, संग्रह नहीं, त्याग ही बड़प्पन का परिचायक है। लोक में कोई धनी सेठ आजतक अमर नहीं माना गया है। दानी-त्यागी ही लोकमान्य और लोकप्रिय हुए हैं। किसी धनवान् का बहीखाता नहीं बचा है; दानपत्र तो आजतक सुरक्षित है। इन बातों से दान और दानी का महत्त्व समझा जा सकता है।

३-दान का प्रयोजन

सभ्य समाज में दान की इतनी प्रतिष्ठा क्यों है और उससे सार्वजनिक तथा व्यक्तिगत जीवन को क्या लाभ पहुँचता है-इस पर भी, संक्षेप में विचार करना चाहिए।

(क) दान-परोपकार ईश्वर की पूजा है:- शास्त्र का वचन है कि बुद्धिमान प्राणी जिस उपाय से भी जिस किसी प्राणी को प्रसन्न कर दे वही ईश्वर की पूजा है- येन केन प्रकारेण यस्य कस्यापि देहिनः। सन्तोषं जनयेत्प्राज्ञः तदेवेश्वरपूजनम्।।

जनता-जनार्दन की पूजा इसी प्रकार होती है। जनता का एक अंग यदि निर्बल है तो सबल अंग का यह कर्त्तव्य है कि वह उसे सहारा दे। ईश्वरीय व्यापार परस्पर आदान-प्रदान से चलता है। ईश्वर यह चाहता है कि जिसे जो शक्ति मिली है, वह उसका सदुपयोग करे- उससे स्वयं लाभ लेकर दूसरों को भी लाभ पहुँचाए। पेड़ों का फल, नदियों का जल दूसरों के काम आता है। मनुष्य का वैभव भी दूसरों के काम आए- यही ईश्वर की कामना जान पड़ती है। दान-परोपकार से मनुष्य जीवन को सार्थक बनाता हे, लोक के रूप में भगवान् का अनुग्रह प्राप्त करता है। उसका जीवन संसार के किसी काम आता है। 'परोपकाराय इदं शरीरम्'।

(ख) दान-परोपकार से सभ्यता का विकास होता है:- स्वार्थपूर्ण संग्रह की भावना से सभ्यता का निर्माण नहीं होता। सभ्यता का आधार है त्याग-सेवा-परमार्थ। समाज के प्रति प्रत्येक मनुष्य का कुछ कर्त्तव्य है। उस कर्त्तव्य को त्यागकर वह अपना और लोक का कल्याण नहीं कर सकता। पंडित रामनरेश त्रिपाठी के शब्दों में-"मनुष्य जिस समाज में पैदा हुआ है, उसके गुणों और अवगुणों का एक संकलित पदार्थ है। उसने अपने समाज से भाषा ली, अन्न-वस्त्र लिए, रहन-सहन लिया, समाज में प्रचलित कार्यों का ज्ञान प्राप्त किया और जीवन-निर्माण की सड़क ली। अनेक व्यक्तियों के सम्मिलित सहयोग से उसका जीवन बना हुआ है; इससे उसे उनका कृतज्ञ होना चहिए और शरीर रहते रहते उनके उपकारों के ऋण से उऋण होना चाहिए। दूसरों की सेवा करना परमार्थ नहीं, विशुद्ध स्वार्थ का काम है।"

मनुष्य को किसी भी उपयोगी वस्तु का अनावश्यक संग्रह करने का अधिकार नहीं है। भागवत में नारद ने कहा है कि जितने से अपना पेट भरता हो, उतने में ही प्रत्येग व्यक्ति का स्वत्व है, जो उससे अधिक संचय करता है वह चोर और दंडनीय है-

यावद् भ्रियेत जठरं तावत् स्वत्वं हि देहिनाम्।
अधिकं योऽभिमन्येत स स्तेनो दण्डमर्हति।।

अर्थ का दान के रूप में धर्म-संयुक्त करने से वह व्यर्थ नहीं होता- उससे लोक-कल्याण होता है, सामाजिक विषमता दूर होती है।

(ग) दान-परोपकार से पारस्परिक एकता होती है:- सामाजिक संगठन पर भी दान-परोपकार का बड़ा प्रभाव पड़ता है। कौटिल्य ने कहा है कि दान के समान वश में करने वाली कोई वस्तु नहीं है- 'न दानसमं वश्यम्'। इससे परस्पर आत्मीयता उत्पन्न होती है, नीच-ऊँच का भेद-भाव मिटता है, अहंकार के स्थान पर दया, करुणा, प्रेम की भावनायें बढ़ती हैं। ये सब समाज के संयोजक तत्त्व हैं। दान-परोपकार के पीछे छिपी हुई सहृदयता से सहानुभूति होती है और सहानुभूति से पारस्परिक सहयोग होना स्वाभाविक है।

(मनुष्य का विराट् रूप' से साभार क्रमशः)

गतांक से आगे

जीवन जीने का वास्तविक सूत्र

उठो, जागो, बढ़ो; जब तक लक्ष्य प्राप्त न कर लो!

-डॉ. शान्तिदेव बाला-

किसी भी सूत्र या सिद्धान्त को जीवन में उतारने के लिए उसकी व्यावहारिक व्याख्या करनी पड़ती है। जैसे मार्क्स के साम्यवाद सिद्धान्त को रूस की धरती पर लागू करने के लिये लेनिन को उसकी व्याख्या इस दृष्टि से करने पड़ी कि रूस की समस्याओं का निराकरण किया जा सके। हर कदम पर लेनिन ने मार्क्सवाद की व्यावहारिक व्याख्या की। उदाहरण स्वरूप रूस में तब बिजली नगण्य ही थी, इस हालत में रूस का औद्योगिकी-करण असम्भव ही था तो लेनिन ने नारा दिया 'विद्युतीकरण ही साम्यवाद है' और कई वर्षों तक विद्युतीकरण साम्यवाद का पर्याय बना रहा। लेनिन की व्यावहारिक धारणा इतनी मौलिक होती गई कि उसे लेनिनवाद कहा जाने लगा। इसी प्रकार 'उत्तिष्ठत जागृत...' उपनिषद के इस सूत्र की व्याख्या आज के भारत और उसकी जटिल समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में विस्तार से करनी पड़ेगी। मेरी दृष्टि में इस आह्वान की एक सरल व्याख्या तो इस प्रकारकी जा सकती है। यह उद्घोष एक युवा संन्यासी का है तो उसका आह्वान मूलतया युवा वर्ग को ही है। वैसे भी इतिहास की धारा को सदैव युवा वर्ग ने ही मोड़ा है वह चाहे शंकाराचार्य हों बुद्ध हों महावीर हों या दयानन्द या गांधी। भारत एक अत्यन्त पुराना राष्ट्र पर एक युवा देश है हमारी जनसंख्या में युवा वर्ग बड़ी संख्या में है। भारत से भ्रष्टाचार, सामन्त- वादी सोच, अंधविश्वासों, रूढ़ियों के कारण फैलती हिंसा, क्रूरता मिटाने के लिये युवा पीढ़ी को ही नेतृत्व संभालना होगा।

समस्यायें बहुत भयानक हैं। अगर इतनी विषम समस्याओं से जूझना है तो नया रक्त, नया जोश, नई वैज्ञानिक सोच तो युवा शक्ति में ही मिल सकेगी।

समस्याओं की भयावहता से डरना नहीं है। कोई भी लड़ाई डर कर नहीं जीती जा सकती। हर युद्ध मौत का डर छोड़ कर ही लड़ा जाता है। जीवन का अर्थ ही है, समस्याओं से जूझना। यह केवल निडर होकर ही किया जा सकता है। हर देशवासी को, हर वर्ग के लोगों को उभरती पीढ़ी को, साहस से लबरेज होना पड़ेगा कि कठिन से कठिन परिस्थिति में पूर्ण विश्वास के साथ वह कह सके कि इस चुनौती का सामना कर के ही रहूँगा या रहूँगी।

इस समय तो हमारा लक्ष्य बहुत कुछ स्पष्ट है। अपने भारत को भ्रष्टाचार से मुक्त रखना, गरीब वंचित वर्गों को समानता दिलाना, मानवीय मूल्यों को कदम-कदम पर स्थापित करना, अन्ध विश्वासों रूढ़ियों से मुक्त एक संवेदनशील समाज की स्थापना करना। कोई भी ऐसा काम हम न करें, जो हमारे देश की छवि को धूमिल करे, हमारी संप्रभुता को कमजोर करे। हमें पूरी ईमानदारी से पहले स्वयं को बदलना होगा विवेकानन्द की भांति। हमार एक एक का जीवन बदले तो समाज और देश भी बदल जायेगा।

यह लक्ष्य निश्चय ही बड़ी कठिन साधना के बाद ही प्राप्त हो सकेगा और यह भी पूरी संभावना है कि हम हर समय सफलता न प्राप्त करें। गहन असफलताओं से सामना होगा क्योंकि राह लम्बी भी है और कठिन भी। हमारे युवा नायकों को कहन असफलता के बाद भी फिर कदम उठाने होंगे। आज नौजवानों में बढ़ती आत्महत्या की प्रवृत्ति आपत्तिजनक है, चिन्ता का विषय है। युवा शक्ति को तो लक्ष्य का संधान करना ही होगा।

कठिनाइयां हमें डरा न सकें, चुनौतियां हमें सहमा न सकें, हर हार को जीत में बदल डालने का अदम्य साहस हो। सबको साथ मिलकर लक्ष्य की ओर बढ़ना है। एकला चलो रे ठीक है, पर संगठन में बड़ी शक्ति है। हर हार के बाद मुस्कराना और हर हार को जीत में बदलना ही हमें छुरे की धार से तीक्ष्ण राह पर चलने का साहस देगा।

भारत में एक विषम समस्या और है। स्त्रियों, बच्चियों यानि महिलाओं के प्रति एक बड़ी नकारात्मक सोच, बल्कि इसे यों कहा जा सकता है, हर निर्बल के प्रति एक हिंसात्मक अवमानना। महिलाओं की समस्या केवल महिलाओं की ही समस्या नहीं है, वह पूरे समाज की समस्या है। इसी प्रकार हर वंचित निर्बल शोषित की समस्या वह चाहे स्त्री हो या पुरुष पूरे समाज की समस्या है। हमें सोच को बदलना होगा औरत या लड़की समाज की सृष्टि की अनिवार्य घटक है। वह पुरुष से भिन्न हो सकती है पर गौण नहीं। मां के बिना आप संसार में नहीं आ सकते। पत्नी के बिना घर बार वंश नहीं चलता। बहन के बिना उत्सवधर्मिता नहीं, कलाई सूनी है आपकी, तो फिर बेटी के प्रति यह क्रूर व्यवहार क्यों?

उत्तिष्ठत जागृत हमें, सबको, युवा, नई पीढ़ी को झकझोरने का एक आह्वान है, अनुशासन में रहने का निमंत्रण है, असंभव को संभव बनाने को एक उपक्रम है, भय से मुक्त होकर लक्ष्य प्राप्त करने की निरन्तर यात्रा है।

-४२३सी, सेक्टर-बी, महानगर, लखनऊ

होता सदस्य परिचय-48

नरेन्द्र भूषण

-उमेश राही

श्री नरेन्द्र भूषण का जन्म मीरजापुर (उ.प्र.) जनपद मुख्यालय से दूर छोटे से गाँव घनश्यामपुर में एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। पिता श्री राम सुन्दर लाल पेशे से अध्यापक तथा माता श्रीमती लक्ष्मी देवी एक धर्मनिष्ठ घरेलू महिला थीं। आपकी सम्पूर्ण शिक्षा वाराणसी में हुई। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में गणित विषय से एम. एस-सी. तथा एल.एल.बी. की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् आप उ. प्र. लोक सेवा आयोग की वर्ष 1975 की पी.सी.एस. परीक्षा के माध्यम से पी.सी.एस. वित्त के लिए चयनित हुए। लगभग एक वर्ष प्रशिक्षण के बाद आपकी प्रथम नियुक्ति कोषाधिकारी गाजीपुर के पद पर हुई। वहां चार वर्ष के कार्यकाल में उन्होंने दो बार अपनी प्रत्युत्तपन्नमति से फर्जी भुगतान लेने वालों को रंगे हाथ गिरफ्तार कराया। जिलाधिकारी, कमिश्नर तथा उ. प्र.सरकार द्वारा आपको प्रशंसित किया गया। आजमगढ़ के कोषाधिकारी के रूप में चार वर्ष के कार्यकाल में आप वहाँ की अग्रणी साहित्यिक संस्था 'चिंतन विचार केन्द्र' से सक्रिय रूप से जुड़े रहे। आपकी निष्पक्षता एवं ईमानदारी की ख्याति के कारण माननीय न्यायालय द्वारा वहाँ आपको महर्षि दयानन्द बाल विद्या मंदिर का प्रबन्धक (रिसीवर) नियुक्त किया गया था।

मुख्य कोषाधिकारी इलाहाबाद के रूप में पदस्थ रहते हुए आपने वहाँ सरकारी भुगतान, प्राप्तियों आदि के लिये परम्परागत रूप से नियत भारतीय स्टेट बैंक के स्थान पर इलाहाबाद बैंक से व्यवस्था कराई जो उत्तर प्रदेश के इतिहास में प्रथम प्रयोग था। आपकी योग्यता को देखते हुए शासन द्वारा वर्ष 1986 में आपके नेतृत्व में एक अध्ययन दल आन्ध्र प्रदेश भेजा गया जिसकी रिपोर्ट उ.प्र. में कोषागार लेखा प्रणाली में एक मील का पत्थर है। इलाहाबाद के कार्यकाल में आपको श्री बी.एम.काटजू, तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश मा.उच्च न्यायालय द्वारा भी कार्यों के लिए प्रशंसित किया गया। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, परिवहन, कारागार प्रशासन, लखनऊ विकास प्राधिकरण, ग्रामीण विकास, आगरा विकास प्राधिकरण, पेंशन जैसे महत्त्वपूर्ण विभागों में पदस्थ रहते हुए आपने ख्याति अर्जित की तथा उच्चाधिकारियों एवं शासन द्वारा सराहे गये।

वर्ष 2010 में एडीशनल डायरेक्टर ट्रेजरी के पद से सेवा निवृत्ति के पश्चात राज्य सरकार द्वारा आपको दो वर्ष तक लखनऊ में स्मारकों, पार्कों की समिति, एक वर्ष तक यू.पी.डेस्को का वित्तीय सलाहकार बनाये रखा। सम्प्रति आप शासन द्वारा स्थानीय निकाय निदेशालय में वित्तीय सलाहकार के रूप में नियुक्त हैं।

अपने शासकीय सेवा काल की उपलब्धियों के अतिरिक्त आप सामाजिक सरोकारों से भी गहराई से जुड़े हुए हैं।

आप नियमित रूप से योगाभ्यासी हैं तथा भारतीय योग संस्थान दिल्ली के अधीन संचालित जानकीपुरम, लखनऊ केन्द्र के केन्द्र प्रमुख हैं जहाँ प्रातःकाल आपके द्वारा नित्य योग का निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है।

वैश्विक एकता एवं समरसता के प्रति समर्पित संस्था 'इन्टरनेशनल गुडविल सोसाइटी ऑफ इण्डिया' के लखनऊ चैप्टर के आप कोषाध्यक्ष हैं।

साहित्यिक सामाजिक संस्था 'अनन्त अनुनाद' के आप संस्थापक संरक्षक हैं जो साहित्यिक योगदान के साथ ही साहित्यकारों को सम्मानित कर उत्साहवर्धन करती रहती है।

'सुन्दरम' संस्था के आप संस्थापक अध्यक्ष हैं जो काव्य गोष्ठियों, कवि सम्मेलनों का आयोजन तथा साहित्यकारों को सम्मानित कर साहित्यिक अवदान में भागीदारी करती है।

पर्यावरण संरक्षण के अन्तर्गत आयोजित कार्यक्रमों तथा वृक्षारोपण एवं गोमती सफाई अभियान में आपकी सक्रिय उपस्थिति दिखाई देती है।

अपनी रचनाओं के माध्यम से आप लोगों तक नैतिक मूल्यों, आध्यात्म, राष्ट्रीय विचार धारा आदि का संदेश पहुंचाने का पुनीत कार्य करते हैं। आपकी कवितायें आकाशवाणी तथा लखनऊ दूरदर्शन से प्रसारित होती रहती हैं।

काव्यायन

गणतंत्र दिवस (२६ जनवरी)

ऐसा गणतंत्र दो

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

हे प्रभु! देश को अब ऐसा गणतंत्र दो,
जन-जन को सुख से जीने का मंत्र दो।
ऋषि-मनीषियों के तप की सुप्रभा मिले,
जीवन में आलोकित नैतिक-मूल्य हों।
सत्य, अहिंसा, सदाचार, सद्भाव पले,
स्वाभिमान, श्रम, समता भाव अमूल्य हों
महारोग मिट जाए भ्रष्टाचार का,
त्याग और बलिदान समन्वित तंत्र दो।
अग्निदूत, सद्-राष्ट्रभक्त आदर्श बनें,
युवाशक्ति सद्कर्मों से अनुप्राणित हो।
फूले-फले कल्पतरु स्वस्थ स्वराज का,
राष्ट्रधर्म से मानवता अनुनादित हो।
ज्ञान-क्रान्ति से उन्नत मार्ग प्रशस्त हो,
उड़ने के हित खग को व्योम स्वतंत्र हो।
वायु, नीर, नभ, पृथ्वी, निर्मल स्वच्छ रहें,
निर्धन श्रमिक मनाएं होली दीवाली।
शांति स्नेह की समरस अमृत वर्षा से,
घर घर में छाए समृद्धि की हरियाली।
देश की सीमाओं पर फहरे विजयी ध्वज,
'जन-गण-मन' स्वर गूँजे, वह यंत्र दो।

–117, आदिल नगर, पो.–विकास नगर, लखनऊ–22

सरकार नहीं चाहिये

❑डॉ. कैलाश निगम

धर्म व अधर्म में न
भेद जिसको हो ज्ञात
सत्य से परे हो
वह सार नहीं चाहिये।
धर्म-स्थलों की जो
पवित्रता को भंग करे
जनता को ऐसा
किरदार नहीं चाहिये।
द्वेष अनुशासन के
नाम से सिखाये हमें
ऐसा कोई घातक
विचार नहीं चाहिये।
देशद्रोहियों के चरणों में
रख दे जो शीश
ऐसी दीन - हीन
सरकार नहीं चाहिये।।

–4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

मुक्तक

❑कपिलदेव राय, पूर्व प्रवक्ता

फटा आँचल किसी का सी न सका,
घूँट विष के जो कभी पी न सका।
उसका जीना भी कोई जीना है–
औरों के वास्ते जो जी न सका।।

है नहीं चाह ये भंडार मुझे धन का मिले।
है नहीं चाह ये बढ़िया लिबास तन का मिले।
है नहीं चाह ये आहार मिले मुझको मधुर,
है यही चाह कोई मीत मुझे मन का मिले।।

सोना, चाँदी न मुक्ता न लाल रतन लाया हूँ,
मधुर आहार ना भूषण न वसन लाया हूँ।
तीव्र काँटों से छिदा कर पोर पोर अपने,
भेंट को मैं तेरी कविता के सुमन लाया हूँ।।

–कोल बाजबहादुर (कोलघाट), आजमगढ़–276001

प्रेम-सौरभ

❑डॉ. मिर्ज़ा हसन 'नासिर'

प्रेम का सौरभ इन्हें भाता नहीं,
वैर-मत्सर उर से क्यों जाता नहीं?
कल बया के नीड़ में थी रौशनी,
आज क्यों जुगनू नज़र आता नहीं?
कल तलक अविराम जो गाता रहा,
चुप है क्यों, वो गीत क्यों गाता नहीं?
अंधविश्वासों ने अंधा कर दिया,
कुछ भी इनको अब नज़र आता नहीं।
दूर मंज़िल पंथ है कंटक भरा,
बढ़ रहा हूँ नित्य सुस्ताता नहीं।
नित बनाता हूँ मैं नूतन छन्द भी,
नुक्ताचीनी से मैं घबराता नहीं।
मैं हवा में भी जलाता हूँ दिये,
आँधियों से मात मैं खाता नहीं।
चोट ऐसी दिल पे खाई थी कभी,
चैन 'नासिर' आज भी पाता नहीं।

–जी–02, लोकपुर रेज़िडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

पगडंडी भूले !

❑दिनेश मिश्र 'राही'

ताँगा, इक्का लुप्त है, लुप्त है संस्कृति-शान
सरिया, सोहर गुम हुये, देश हुआ वीरान।
देश हुआ वीरान, न आल्हा गायन होता
बेला, नाटक सुप्त, लगा गये पल में गोता।
समय ने विरहा गीत आज है फिर से माँगा
आन बान व शान कभी थे इक्का ताँगा।।

भूले शिष्टाचार औ, बारह मासा गीत
सावन गीतों का कभी, बना न पाये मीत।
बना न पाये मीत, फाग के गीत न गाये
भौंवर के अब गीत न सुनने को हम पाये।
कह 'राही' समुझाय कहाँ गये सावन झूले
गाँव, गली, गलियार, खेत, पगडण्डी भूले।।

–अम्बिका पुरम, आनन्द नगर, सीतापुर (उ.प्र.)

हर्ष-चतुष्पदी

पाया, खोया

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

प्रातः जगा फिर न सोया,
रात्रि सोया फिर न रोया,
करवटें बदल कर तौलता रहा–
क्या पाया और क्या खोया।
हमको अलौकिक ज्ञान दो,
जो हो पारलौकिक ज्ञान दो,
मारकर जिला दे, पलभर–
न रहूँ लौकिक, ज्ञान दो।।
आप सबने हमें लायक नहीं माना,
मैं भी ब्रह्म से हूँ, नहीं यह सत्य जाना।

–अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी काव्य

इस तरह तय हुआ...

❑पद्मश्री गोपालदास 'नीरज'

इस तरह तय हुआ साँस का यह सफर
ज़िन्दगी थक गई, मौत चलती रही !

एक ऐसी हँसी हँस पड़ी धूल यह
लाश इन्सान की मुस्कराने लगी,
तान ऐसी किसी ने कहीं छेड़ दी
आँख रोती हुई गीत गाने लगी,
एक नाजुक किरण छू गई इस तरह
खुद-बखुद प्राण का दीप जलने लगा,
एक आवाज़ आई किसी ओर से
हर मुसाफिर बिना पाँव चलने लगा,
रूप के गाँव का पर मिला छोर यूँ-
देह बढ़ती रही, उम्र ढलती रही।
इस तरह तय हुआ.....

एक दिन देखता हूँ कि रूठी हुई
चाँदनी चन्द्रमा से खड़ी दूर है,
एक दिन यह सुना फूल की चोट से
एक पाषाण का दिल हुआ चूर है,
एक दिन आँसुओं ने कहा आँख से
रो न हम आयेंगे कल बदल कर वसन,
एक दिन एक बोला शलभ दीप से,
चूम लूँ मैं तुझे तब मुझे कर दफन,
पर सुनी, अनसुनी बात ऐसे हुई
रूठ सोया शलभ, लौ मचलती रही।
इस तरह तय हुआ.....

एक दिन ज़िन्दगी की कड़ी धूप में
दो पखेरू मिले मुक्त नभ के तले,
कुछ न बोले, न डोले न कुछ बात की
हो गया प्यार लेकिन नयन जब मिले,
होठ ज्यों ही उठे तो नियति हँस उठी
आँधियाँ चल पड़ीं, तम बरसने लगा,
छुट गया हाथ से हाथ भीगा हुआ
गालियाँ मार संसार हँसने लगा,
और फिर यूँ कटी वह विरह की निशा
स्नेह बुझता रहा, याद जलती रही।
इस तरह तय हुआ.....

एक दिन एक आया पथिक द्वार पर
टुक रुका, एक-दो घूँट पानी पिया,
पथ-सफर का लिया साथ सामान सब
एक फेंकी विवश दृष्टि और चल दिया,
उस दिवस से मगर एक तस्वीर सी
अश्रु की भीति पर रोज़ खिंचने लगी,
रँग भरने लगे जागकर रात, दिन
मोतियों से गली-गैल सिंचने लगी,
किन्तु पूरा हुआ चित्र वह इस तरह
रँग हुए एक सब, छवि बदलती रही।
इस तरह तय हुआ.....

एक दिन एक तारा गिरा टूटकर
एक उजड़े हुए नीड़ ने रख लिया
फूल ने मुस्कुराकर तभी यह कहा-
यह बुझा है दिया क्यों इसे दिल दिया?
बोलने तब लगा नीड़ का एक तृण
हर दुखी को दुखी से सदा प्यार है
आँसुओं के लिए गोद बस धूल है
फूल का तो धरे शीश संसार है!
खत्म झगड़ा मगर इस तरह यह हुआ
फूल झरता रहा, धूल खिलती रही।
इस तरह तय हुआ.....

एक दिन एक बोली पिटी गोट यूँ-
एक मौका अगर तू मुझे और दे
मान सच यह कि बाजी बदल दूँ अभी
हार को जीत से, जीत को हार से
सुख खिलाड़ी प्रथम बार ठिठका ज़रा
फिर बदल गोट वो चाल चलने लगा
जब लगी अक्ल सब तब बहुत देर में
खेल का कुछ तराजू बदलने लगा
पर हुआ खेल वह भी खतम इस तरह
गोट पिटती रही, चाल चलती रही।
इस तरह तय हुआ.....

('प्राण गीत' से साभार)

राजस्थान-समाचार

अर्जुनदेव चड्ढा को 'राष्ट्रीय गौरव सम्मान'

कोटा, ३० दिसम्बर २०१३। राष्ट्रीय खत्री अरोड़ा मोदी समन्वयक समिति के नाथद्वारा राष्ट्रीय अधिवेशन में जाने माने समाजसेवी व पंजाबी समिति कोटा के अध्यक्ष अर्जुनदेव चड्ढा को 'राष्ट्रीय गौरव सम्मान' की गौरवमयी उपाधि से सम्मानित किया गया। नाथद्वारा के साहित्य कला मण्डल सभागार में जैसे ही

आयोजकों ने इस प्रतिष्ठित अवार्ड के लिए श्री चड्ढा को आमंत्रित किया, खचाखच भरा हॉल तालियों की गड़गडाहट से गूँज उठा और हॉल में बैठे देशभर से आये गणमान्य व प्रतिष्ठित लोगों ने चड्ढा का अभिवादन किया। सम्मेलन में राष्ट्रीय स्तर पर कार्य कर रहे आठ व्यक्तियों को भी सम्मानित किया गया।

सम्मानित होने वालों में मुख्य रूप से ख्यातिप्राप्त फिल्म प्रोड्यूसर डायरेक्टर कीर्ति कुमार (अभिनेता गोविन्दा के भाई) मुंबई, अर्जुनदेव चड्ढा कोटा, विजय अरोड़ा उदय पुर, जगदीश लाल कपूर लखनऊ, ज्योति प्रकाश छाबड़ा बीकानेर व अन्य थे। संस्था सचिव व संस्थापक राजेन्द्र खत्री एवं प्रोफेसर खत्री ने पीताम्बर ओढ़ाकर व स्मृति चिन्ह प्रदान कर अतिथियों को सम्मानित किया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र मोदी ने अतिथियों व सहभागियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की पूर्ण जानकारी दी। *(दर्शन पिपलानी)*

आर्य समाज द्वारा सिक्ख धर्माचार्यो को वेदों का सेट भेंट

कोटा, २५ दिसम्बर २०१३। अम्बालवी सेवा संस्थान, कोटा द्वारा आयोजित शहीदी समागम पर्व के अवसर पर आर्य समाज द्वारा जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में सिक्ख धर्माचार्य ज्ञानी गुरुनाम सिंह को भाष्य सहित चारों वेदों का सेट भेंट किया गया।

इस अवसर पर ज्ञानी गुरुनाम सिंह ने कहा कि वेद भारतीय संस्कृति के मूलग्रन्थ हैं। यह मेरा सौभाग्य है कि आर्य समाज ने मुझे इस योग्य समझा। यद्यपि मैंने विधिवत् संस्कृत का अध्ययन नहीं किया तथापि मैं आर्य समाज को यह विश्वास दिलाता हूँ मैं इनका स्वाध्याय करके ज्ञान अर्जित करूँगा।

इस अवसर पर आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, मंत्री कैलाश बाहेती, अरविन्द पाण्डेय, प्रधान वेद प्रचार समिति, जे.एस.दुबे, प्रधान आर्य समाज विज्ञान नगर तथा आर्य विद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री एवं रामप्रसाद याज्ञिक उपस्थित थे। कार्यक्र में सैकड़ों की संख्या में सिक्ख धर्मावलम्बी सहित गण्यमान्य नागरिक व धर्मप्रेमी उपस्थित थे। *(अरविन्द पाण्डेय)*

सरोपा भेंट कर किया आर्यजनों का सम्मान

कोटा, २५ दिसम्बर। अम्बालवी सेवा संस्थान, कोटा द्वारा आयोजित शहीदी समागम पर्व के अवसर पर सेवा संस्थान द्वारा आर्य समाज जिला सभा कोटा के पदाधिकारियों एवं विद्वानों - अर्जुनदेव चड्ढा, कैलाश बाहेती, अरविन्द पाण्डेय, जे.एस.दुबे, आर्य विद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री एवं रामप्रसाद याज्ञिक को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि शहीदी समागम पर्व के इस अवसर पर हमें गुरु गोविन्द सिंह के चारों बलिदानी साहिबजादों से धर्म व देशहित में बलिदान देने की प्रेरणा लेनी चाहिए। गुरुपुत्रों का यह बलिदान विश्व के इतिहास में अद्वितीय है जिसमें दो साहिबजादों को दीवार में जीवित चुनवा दिया गया था। दोनों साहिबजादों ने हंसते हुए धर्म की खातिर अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। समागम पर्व के इस अवसर पर कोटा तथा हाड़ौती क्षेत्र के सैकड़ों की संख्या में सिक्ख धर्मावलम्बी, गण्यमान्य जन उपस्थित थे।

निराश्रित बालक-बालिकाओं को गर्म वस्त्र वितरित

कोटा, ३० दिसम्बर। आर्यसमाज जिला सभा कोटा द्वारा रंगबाड़ी स्थित निराश्रित बालगृह में बालक-बालिकाओं को गर्म स्वेटर, जैकेट, वस्त्र आदि वितरित किये गये। जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि आप सभी मित्र भाव से हंसते मुस्कुराते हुए मिलजुल कर रहें। बड़े बच्चे छोटे बच्चों का ध्यान रखें एवं अच्छी आदतों को जीवन में उतारें। इस अवसर पर जिला मंत्री कैलाश बाहेती, जे.एस.दुबे, प्रधान आर्य समाज विज्ञान नगर, अरविन्द पाण्डेय, प्रधान आर्य समाज गायत्री विहार कोटा, आचार्य अग्निमित्र शास्त्री एवं राजीव आर्य उपस्थित थे। संस्था प्रबंधक कमल सक्सेना ने सभी आर्यजनों का धन्यवाद किया।

आर्य समाज द्वारा गर्म वस्त्र वितरण कार्यक्रम की शृंखला में वर्ष के अन्तिम दिन ३१ दिसम्बर २०१३ को रंगबाड़ी, खड़े गणेश जी की झुग्गी झोंपड़ी, माला फाटक झुग्गी झोंपड़ी, अनन्तपुरा कच्ची बस्ती, मेडिकल कॉलेज रोड पर स्थित झुग्गी झोंपड़ी में गर्म वस्त्र वितरित किये गये।

हरदोई-समाचार

आर्यसमाज सण्डीला में मकर संक्रान्ति पर्व

आर्य समाज सण्डीला के तत्वावधान में मकर संक्रान्ति पर्व दि.१४.०१.१४ को मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ सम्पन्न हुआ तथा मकर संक्रान्ति पर्व के महत्त्व पर वक्ताओं ने प्रकाश डाला। सभी वर्गों के व्यक्तियों ने 'खिचड़ी भोज' में भाग लिया। सामाजिक सद्भावना के विस्तार की दृष्टि से आर्य समाज का यह आयोजन चर्चा का विषय है।

(डा.सत्यप्रकाश, प्रधान)

सीतापुर-समाचार

पं.गंगाधर शर्मा स्मृति सम्मान

आर्य समाज सीतापुर ने 'पं.गंगाधर शर्मा स्मृति सम्मान' आर्य समाज चन्द्रनगर लखनऊ के प्रधान श्री जगदीश खत्री (से.नि.पुलिस उपाधीक्षक) को प्रदान करने का निर्णय लिया है। यह सम्मान दिनांक ०१.०३.१४ को राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह, लखनऊ में आयोजित होने वाले 'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-२०१४' में प्रदान किया जायगा।

आजमगढ़-समाचार

डॉ.कन्हैया सिंह को पत्नीशोक!

साहित्य मनीषी डॉ.कन्हैया सिंह (पूर्व उपाध्यक्ष, उ.प्र.भाषा संस्थान) की धर्मपत्नी श्रीमती ललिता सिंह (७५) का दिनांक ०७.०१.१४ को निधन हो गया। अनेक संस्थाओं ने श्रीमती सिंह के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त किया है।

'आर्य लोक वार्ता' परिवार की परमात्मा से प्रार्थना है वह दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति तथा शोक संतप्त परिवारिक जनों को इस आघात को सहने की शक्ति प्रदान करे।

(सं.सू.-कपिलदेव राय)

राजस्थान-समाचार

वैदिक कार्यकर्त्ता परिवार सम्मेलन

नवलखा महल, उदयपुर में आर्य परिवारों के सदस्यों में परस्पर प्रगाढ़ सम्बन्धों में निरन्तरता सुनिश्चित करने तथा वैदिक परिवारों के सदस्यों में वैदिक संस्कृति का गम्भीर प्रसरण करने के उद्देश्य से दिनांक २२.१२.१३ को यह मनोरंजक, प्रेरणास्पद, सारगर्भित कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में संस्कार संप्रेषण के अनेक पहलुओं को स्पर्श किया गया। महर्षि दयानन्द विद्यालय फतेहनगर के प्रबन्धक श्री सुरेश मित्तल के निर्देशन में तैयार 'कठपुतली शो' से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। यह 'शो' केवल मनोरंजक ही नहीं, वैदिक भजनों तथा शिक्षात्मक संवादों से गुम्फित होने के कारण प्रेरणास्पद भी था। वैदिक ज्ञान परीक्षा के सभी सम्भागियों को स्वाध्याय हेतु पूर्व में वैदिक साहित्य भेजा गया था। तदाधारित प्रतियोगिता प्रो.ए.एल. तपाड़िया के निर्देशन में वरिष्ठ एवं कनिष्ठ वर्ग बना कर ली गयी। इस परीक्षा में वरिष्ठ वर्ग में धीरज अरोड़ा, इन्द्र प्रकाश यादव व प्रमोद उज्ज्वल ने तथा कनिष्ठ वर्ग में हिरेण गुप्ता, गौरव खण्डेलवाल, संस्कार खण्डेलवाल ने प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त किया। सभी को न्यास द्वारा पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन आर्यसमाज हिरणमगरी के उपमंत्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया। शान्तिपाठ एवं सहभोज के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

बाराबंकी-समाचार

'सुमन' जो असमय मुरझा गया!

'आर्य लोक वार्ता' की प्रमुख हितैषी श्रीमती (डॉ.) राधारानी शुक्ला, भिठरिया, बाराबंकी की ज्येष्ठ पुत्रवधू श्रीमती सुमन शुक्ला का २४.१२.१३ को लम्बी बीमारी के बाद दुःखद निधन हो गया। वे अपने पीछे पतिदेव श्री नीरज शुक्ल के साथ दो पुत्रियां तथा पुत्र को छोड़ गई हैं। मृत्यु से कुछ दिन पूर्व ही उन्होंने अपनी बड़ी पुत्री का विवाह सम्न कराया तथा कन्यादान

किया। श्रीमती सुमन शुक्ल अत्यन्त मृदुभाषिणी, सरल हृदय तथा गृहकार्य कुशल महिला थीं। उनके चले जाने से न कि शुक्ला परिवार वरन् सम्पूर्ण क्षेत्रीय समाज हतप्रभ और विक्षुब्ध हो उठा।

दि.०३.०१.१४ को श्रीमती डा.आर.आर.शुक्ल के आवास पर शान्तियज्ञ का आयोजन वैदिक विद्वान् डॉ.वेद प्रकाश आर्यके आचार्यत्व में किया गया जिसे आर्य समाज सुमेरगंज के प्रधान दयाशंकर, जगन्नाथ प्रसाद आर्य तथा अन्य आर्य जनों ने मिलकर सम्पन्न कराया। स्व.सुमन शुक्ला के पुत्र, पुत्रियों तथा परिवार के सदस्यों के अलावा शताधिक नर-नारियों ने यज्ञ में आहुतियाँ देकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। डॉ.श्याम मनोहर द्विवेदी तथा बाराबंकी के राजनीतिक क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर श्री रामनरेश रावत, श्रीमती सुधा पाण्डे ने शोक संवेदना व्यक्त की।

इस अवसर पर डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता ने मृत्यु के बाद यज्ञ करने तथा वातावरण शुद्ध करने पर जोर दिया तथा अनावश्यक कर्मकाण्ड से बचने का अनुरोध किया। आपने कहा जीवात्मा अमर है तथा मृत्यु के पश्चात् शुभाशुभ कार्यों के अनुसार दूसरा शरीर धारण करती है। प्रधान श्री दयाशंकर ने लोगों से अंधविश्वास से विरत रहने और पाखंडों का परित्याग करने की अपील की।

दिल्ली-समाचार

स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर टेलीफिल्म

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के संघर्षपूर्ण जीवन पर आधारित एक भव्य टेलीफिल्म 'आह्वान' का निर्माण 'विचार' टीवी द्वारा किया गया है। इस फिल्म का लोकार्पण २ मार्च २०१४ को नील फाउंडेशन दिल्ली के सौजन्य से हरियाणा के मुख्य मंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा के द्वारा किया गया। विचार टीवी के द्वारा आर्य समाज और वेद प्रचार से संबन्धित विविध कार्यक्रमों का प्रसारण आस्था भजन चैनल पर प्रत्येक शनिवार को रात्रि ९.३० से १० बजे तक किया जाता है। 'आह्वान' टेलीफिल्म तथा अन्य कार्यक्रमों के लिए निम्नांकित पते पर सम्पर्क किया जा सकता है।

विचार टेलीफिल्म नेटवर्क लि., ४/१५, सोना उद्योग, पारसी पंचायत मार्ग, अंधेरी (पूर्व), मुम्बई-४०००६९। दूरभाष-(०२२)२८३४३४४४।

गुजरात-समाचार

गीली आँखों से पहली बेटी विदा हुई

कच्छ गुजरात में २००१ में आये भूकम्प में निराधार हुए १७५ बच्चों को आर्य समाज गाँधीधाम ने 'जीवन प्रभात' प्रकल्प में आश्रय दिया है। इस जीवन प्रभात की एक बेटी का पाणिग्रहण संस्कार जीवन प्रभात परिसर में सादगी से, लेकिन उमंग के साथ १९ जनवरी २०१४ को सम्पन्न हुआ। संस्था के महामंत्री वाचोनिधि आर्य ने कन्यादान किया। इस अवसर पर उन्होंने भावुक होकर कहा कि मुझे कन्यादान करने का सौभाग्य मिला। यह अवसर मुझे जीवन पर्यन्त याद रहेगा। जीवन प्रभात में बच्चे संस्कारी बने हैं। उषा बेटी भी यहां के संस्कार से जीवन प्रभात का और पतिकुल का नाम रोशन करेगी। उषा १२ साल पहले अपनी ३ छोटी बहनों व दो भाई के साथ आयी थी। वह सभी बच्चों से ऐसी मिल जुल गई जैसे सभी बच्चे उसके भाई बहन हों। १२वीं कक्षा तक पढ़ी यह बेटी जीवन प्रभात में गृहकार्य सीख रही थी। मुंबई स्थित कंन्स्ट्रकशन कम्पनी में सुपरवाइजर का कार्य कर रहे श्री वीरेन पटेल के परिवार जनों ने उषा को पसंद किया, वहीं जीवन प्रभात के प्रधान और महामंत्री ने उषा की सम्मति से यह कार्य सम्पन्न कराया। *(पिनाकिन आर्य, कार्यालय प्रबंधक, आर्यसमाज, गाँधीधाम)*

पृष्ठ ३ का शेष... **सन्तदर्शन का...**

केला आदि नहीं खाता हूं।' जब कभी उनका मन होता तो बैठने के लिए इशारा करते तो मै बैठ जाता।

१८ अगस्त २००२ को जयपुर जाने से पूर्व उन्होंने अपना प्रोग्राम बताया था। मैंने स्वामी जी से निवेदन किया कि मेरे पास गायत्री मंत्र लिखा हुआ एक अंगौछा या दुपट्टा रखा है, मेरी इच्छा है कि जब आप प्रवचन करें तो इसे डाल लिया करें। स्वामीजी ने उसका रंग पूंछा और स्वीकार तो कर लिया पर अगले दिन मुझे उस अंगौछे के साथ एक छोटी तौलिया रखकर वापस करते हुए बोले कि इसपर 'शान्ति कुंज' लिखा है अतः यह उचित नहीं है। अबस्वामी जी मुझे बेटा कहकर सम्बोधित करने लगे थे तथा 'कल्याण हो' यह आशीर्वाद मुझे नित्यप्रति मिल जाता था।

१५ अगस्त को आश्रम में काफी विद्वानों को सम्मानित किया गया था उनमें डा. दिनेश, डा. मनुदेवजी तथा गुरुकुल के अनेक विद्वान सम्मिलित थे। इसी दिन एक बालक का जन्मदिन भी था। मातृशक्ति ने बड़े उत्साह के साथ जन्मदिन का विशेष कार्यक्रम व आशीर्वाद कार्य आदि सम्पन्न कराया। सभी ने दो दो शब्द आशीर्वाद के कहे। स्वामी जी ने जब व्यासपीठ पर बैठकर आशीर्वाद का कार्यक्रम सम्पन्न किया तो सबसे पहले यही कहा कि 'आजकल आश्रम में वात्सल्य कुछ अधिक बढ़ रहा है जो कि ठीक नहीं है।' देखो, इसकी गहराई में पहुंचो। वह सन्त भौतिक विरक्तता की पराकाष्ठा पर पहुंच चुका है। उसे आत्मबोध हो चुका है। वह परमात्मा में अनुरक्त हो चुका है। उसका मनोरथ सिद्ध हो गया है और इसी परमात्म बोध के साथ उसका जीवन भी पूर्ण हो गया है। *(८५६, सर्वप्रिय विहार, सप्तकुंड, कनखल, हरिद्वार)*

लखनऊ-समाचार

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, लखनऊ के तत्वावधान में श्रद्धा, उत्साह एवं विश्वास के साथ अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस २३ दिसम्बर २०१३ को आर्य समाज मंदिर, लाजपतनगर (चौक) के सभागार में जिला सभा के प्रधान श्री सतीश चन्द्र बिसारिया की अध्यक्षता एवं जिला मंत्री श्री प्रत्यूषरत्न पाण्डेय के नेतृत्व में मनाया गया।

आयोजन का शुभारम्भ वैदिक यज्ञ से हुआ। तत्पश्चात् श्री राधेमोहन शर्मा तथा यतेन्द्र सिंह की मंडली का तन्मय कर देने वाला संगीत कार्यक्रम हुआ। नगर आर्य समाज, रकाबगंज की आर्य महिलाओं द्वारा श्रद्धानन्द बलिदान गाथा का सामूहिक गायन कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण बना। वक्ताओं- आचार्य वेदव्रत अवस्थी, पं.सन्तोष कुमार वेदालंकार, डॉ.रूपचन्द्र दीपक एवं श्री नवनीत निगम ने स्वामी जी के बलिदान की अमर गाथा के साथ ही उनके मौलिक कार्यों पर प्रकाश डाला। आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के उपप्रधान श्री मनमोहन तिवारी की उपस्थिति उल्लेखनीय थी। इस अवसर पर नगर की समस्त आर्य समाजों के प्रतिनिधिगण मौजूद थे। वातावरण वैदिक जयघोषों से गूँजता रहा। सभा के अन्त में जलपान वितरण की व्यवस्था की गई।

राजाजीपुरम में 51 कुण्डीय यज्ञ

गतवर्ष की भांति आर्य समाज के प्रवक्ता, समाजसेवी एवं कवि श्री धुरेन्द्र स्वरूप बिसारिया 'प्रभंजन' के पुरुषार्थ एवं प्रयत्न से सरस्वती लान्स राजाजीपुरम में ५१ कुण्डीय यज्ञ दिनांक ०५.१२.१३ को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। यजमानों के उत्साह का यह आलम था कि निर्धारित ५१ कुंडों के स्थान पर लगभग ८७ यज्ञ कुंडों की व्यवस्था करनी पड़ी। क्षेत्रीय जनता के साथ विभिन्न आर्य समाजों के सदस्य तथा प्रतिनिधिगण कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। *(विस्तृत समाचार अगले अंक में)*

वैदिक सत्संग अलीगंज

वैदिक सत्संग अलीगंज एवं योगाश्रम की संचालिका श्रीमती कमलेश पाल के जन्म दिवस पर एम.एस.१२०, सेक्टर-डी, अलीगंज में दि.२८.१२.१३ को वैदिक यज्ञ डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर शुभकामना के रूप में श्रीमती सरला आर्य, श्रीमती प्रमोद कुमारी, शोभा सिन्हा एवं श्रीमती आदर्श गुप्ता ने भजन गायन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में श्री सेवकराम आर्य, श्रीमती शशि रस्तोगी, प्रभा नागू, गीतांजलि नागू, कु.देविका, आर.एस.यादव, एस.एस.जुत्शी, श्रीमती निगम, श्री शंकर माथुर, श्रीमती माथुर, श्री अभिषेक एवं श्री पालप्रवीण ने श्रीमती कमलेश के प्रति अपनी शुभकामना व्यक्त की तथा उनके सुन्दर स्वास्थ्य एवं दीर्घायुष्य की कामना की। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने श्रीमती कमलेश की वैदिक सिद्धान्तों के प्रति गहन अभिरुचि तथा उनके उदार मानवतावादी गुणों की चर्चा की तथा उपस्थित लोगों से अपने जीवन को वैदिक धर्म के साँचे में पूरी तरह ढालने का अनुरोध किया।

श्रीमती उर्मिला निझावन अस्वस्थ

आर्य समाज आदर्श नगर के मंत्री श्री सतीश निझावन की धर्मपत्नी श्रीमती उर्मिला निझावन गतवर्ष से अस्वस्थ चल रही हैं। पर्याप्त चिकित्सा-व्यवस्था के बावजूद उनके स्वास्थ्य में अपेक्षित सुधार नहीं हो पा रहा है। आर्य समाज आदर्श नगर की अन्तरंग सभा ने अपनी बैठक में श्रीमती उर्मिला निझावन की अस्वस्थता को देखते हुए आर्य समाज आदर्श नगर का प्रस्तावित वार्षिक उत्सव स्थगित कर दिया है। परमपिता परमात्मा से हम सभी श्रीमती निझावन के स्वास्थ्य लाभ की कामना करते हैं। श्री सतीश निझावन सम्प्रति अपने पुत्र के पास गुड़गाँव में हैं।

ज्ञान प्रसार संस्थान की गद्य गोष्ठी

'ज्ञान प्रसार संस्थान' की गद्य-गोष्ठी श्री महेश चन्द्र द्विवेदी के गोमती नगर स्थित आवास पर साहित्यकार श्री गदाधर नारायण सिन्हा की अध्यक्षता एवं प्रसिद्ध कहानीकार श्रीमती दीपक शर्मा के मुख्य आतिथ्य में १६ दिसम्बर २०१३ को सम्पन्न हुई। ख्यातिप्राप्त गायिका प्रो.कमला श्रीवास्तव ने माँ सरस्वती की भावभीनी वंदना प्रस्तुत की। गोष्ठी में लखनऊ के वरिष्ठ साहित्यकारों ने रोचक संस्मरण, कहानी, आलेख, रेखाचित्र एवं व्यंग्य रचनायें पढ़ीं। डॉ.वेद प्रकाश आर्य एवं श्रीमती नीरजा द्विवेदी के संस्मरण, श्रीमती दीपक शर्मा, डा.रंगनाथ मिश्र 'सत्य', डा.सुरेश प्रकाश शुक्ला एवं श्रीमती अलका प्रमोद की कहानियों तथा श्री महेश चन्द्र द्विवेदी की व्यंग्य रचनाओं को विशेष सराहना मिली।

आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह 2014

आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह 2014 दिनांक 1 मार्च 2014 को सायं 5 बजे से 9 बजे तक राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह, कैसरबाग, लखनऊ में श्री महेशचन्द्र द्विवेदी, पूर्व पुलिस महानिदेशक, उ.प्र. की अध्यक्षता में आयोजित होगा। आर्य जगत के प्रख्यात एवं सर्वमान्य नेता श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल-आसाम) समारोह के मुख्य अतिथि होंगे।

इस वर्ष आर्य लोक वार्ता सम्मान 2014 कवि श्री नरेन्द्र भूषण एवं श्रीमती मीना दीक्षित, महिला प्रभारी, पतंजलि योग समिति, लखनऊ को प्रदान किया जायगा। आर्यसमाज सीतापुर के सौजन्य से पं.गंगाधर शर्मा स्मृति सम्मान से श्री जगदीश खत्री, प्रधान आर्य समाज चन्द्रनगर, लखनऊ सम्मानित होंगे।

इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट उपलब्धियाँ अर्जित करने वाली विभूतियों को भी सम्मानित करने की योजना है, जिनके नाम चयन समिति द्वारा समारोह में घोषित किये जायेंगे।

चुनिन्दा कवियों का काव्यपाठ समारोह का विशिष्ट आकर्षण होगा; जिसमें अमृत खरे, उमेश 'राही', डा.मिर्ज़ा हसन नासिर, डा.कैलाश निगम, ज्योति शेखर, रंजना शर्मा, रमा आर्य 'रमा', गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', धुरेन्द्र स्वरूप बिसारिया 'प्रभंजन' के नाम प्रमुख हैं। *-डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक*

परोपकारिणी न्यास

(आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार)
की संस्थापिका
महात्मा आर्यभिक्षु जी की सहधर्मिणी

लीलावती गुप्त
(१६२७ - २००१)

दीपशिखा निष्कम्प ज्यों, धूम्ररहित अमलीन।
ज्योति जौनपुर में जगी, ज्वालापुर में लीन।।

अनुकरणीय!

दिसम्बर २०१३ अंक में प्रकाशित सम्पदकीय 'मेरी चार धाम यात्रा' लेख की हमारे स्वाध्यायशील पाठकों ने भूरि भूरि सराहना की है। दि.१६.१२.१३ को ज्ञान प्रसार संस्थान, १/१३७, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ में आयोजित सुविज्ञजनों की गोष्ठी में उक्त लेख पढ़ा गया, जो सर्वप्रशंसित हुआ।

आर्ष साहित्य के ज्ञाता और समीक्षक श्री दीपक कुमार दर्शन ने 'मेरी चार धाम यात्रा' लेख की उत्कृष्ट भाषा शैली और भाव व्यंजना की सराहना की है तथा साहित्यिक सौष्ठव से प्रभावित होकर रु.२,५०० का चेक पुरस्कार स्वरूप 'आर्य लोक वार्ता' को प्रेषित कर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। यह सारस्वत सहयोग 'आर्य लोक वार्ता' की बहुत बड़ी पूँजी और शक्ति है!

('आर्य लोक वार्ता' न्यूज डेस्क)

अभिव्यक्ति का समारोह

उ.प्र.हिन्दी संस्थान के निराला सभागार में साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था 'अभिव्यक्ति' द्वारा प्रकाशित कहनी संग्रह 'अस्तित्व' का विमोचन एवं सम्मान समारोह २८.१२.१३ को सम्पन्न हुआ। सुप्रसिद्ध साहित्यकार डा.सरला शुक्ल को 'अभिव्यक्ति वाग्देवी साहित्य श्री सम्मान-२०१३' से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डा.शान्तिदेव बाला ने की तथा मुख्य अतिथि के आसन को डा. सुधाकर अदीब ने सुशोभित किया। संकलन की समीक्षा विशिष्ट अतिथि श्री नसीम साकेती एवं डा.दयानन्द पाण्डेय ने की।

कहानी संग्रह 'अस्तित्व' में १६ नई एवं प्रतिष्ठित दोनों ही तरह की कहानीकारों की कहानियां सम्मिलित की गई हैं, जो इस प्रकार हैं- हवेली-शिवानी, जुगनू-मेहरून्निसा परवेज़, लौटकर-डा.शान्तिदेव बाला, उस मोड़ से गुजरते हुये-सुषमा श्रीवास्तव, बाबू जी की डायरी-दीपक शर्मा, मां ने कहा था-विनीता शुक्ला, फुदकते खंजन-नारायणी, उसका निर्णय-नीलिमा टिक्कू, अम्मा जी का मोबाइल-स्नेह लता, ताला-मीनाक्षी स्वामी, किलकारी-अलका प्रमोद, पट्टी-गज़ाला परवीन, दूर दूर तक क्षितिज-शशि जैन, ये क्या हुआ-शारदा लाल, खेल-उषा राय, वत्सला-अमिता दुबे, खाई-अंजु दुआ जैमिनी, कदम-कदम-हेमलता शर्मा, दर्द-हेमलता मिश्रा। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सुषमा श्रीवास्तव ने तथा आभार डा.अमिता दुबे ने व्यक्त किया।

भावी कार्यक्रम

सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट के तत्वावधान में यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं सत्संग ४ से ७ फरवरी २०१४ को आयोजित होगा। स्थान-शुक्ल सदन, ३/७२, सेक्टर-जी, जानकीपुरम, लखनऊ (कुर्सी रोड, टेढ़ी पुलिया चौराहा, भारतीय स्टेट बैंक के सन्निकट)। -आचार्य विश्वव्रत शास्त्री

आर्य उपप्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में १२ फरवरी २०१४ को आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस मनाया जायगा। विशेष जानकारी जिला मंत्री प्रत्यूष रत्न पाण्डे से मो.६३३५६०२८५६ पर प्राप्त करें।

आर्य समाज लालबाग का वार्षिक समारोह १६ फरवरी २०१४ को आर्य प्रतिनिधि सभा, मीराबाई मार्ग पर मनाया जायगा। वेद व्याख्याता आचार्य आर्य नरेश पधार रहे हैं। -मनीष आर्य, मंत्री

आर्य समाज हसनगंज पार (डालीगंज) का वार्षिक उत्सव २१, २२, २३ फरवरी २०१४ को आर्य समाज मंदिर में मनाया जायगा। योग विद्या के आचार्य स्वामी केवलानन्द जी पधार रहे हैं। - प्रेम शंकर शुक्ल, प्रधान

शिवरात्रि पर विशाल शोभायात्रा का पूर्ववत् आयोजन २७ फरवरी २०१४ शिवरात्रि पर्व पर आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ के तत्वावधान में। -प्रत्यूष रत्न पांडे, मंत्री

आर्य समाज इन्दिरानगर

आर्य समाज, इन्दिरा नगर (१, वैशाली इन्क्लेव, सेक्टर-६) का वार्षिक अधिवेशन रविवार, २६.१२.१३ को प्रातःकाल यज्ञ के उपरान्त प्रधान श्री रमेश चन्द्र त्रिपाठी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य सर्वसम्मति से चुने गये-

श्री रामेन्द्र देव वर्मा	प्रधान
श्री डोरीलाल आर्य	उपप्रधान
श्रीमती कान्ति कुमार	उपप्रधान
श्री रमेश चन्द्र त्रिपाठी	मंत्री
श्री सुरेन्द्र कुमार निगम	उप मंत्री
श्री अभय पाल सिंह	कोषाध्यक्ष
श्री नरसिंह पाल	आय-व्यय निरीक्षक
श्री लक्ष्मण प्रसाद आर्य	पुस्तकाध्यक्ष
श्री संसार नाथ शर्मा	आर्य वीर दल अधिष्ठाता

प्रतिनिधि जिला सभा-सर्वश्री राम गोविन्द ठाकुर, शिव प्रकाश गुप्त, नरसिंह पाल एडवोकेट

प्रतिनिधि प्रान्तीय सभा-डा.इन्द्रदेव गुप्त, गंगाराम आर्य। अंतरंग सदस्य-सर्वश्री सदानन्द राय, आर.जी.शर्मा, डा.वेद प्रकाश(इंजी.), नवनीत निगम, डा.नरेन्द्र कुमार, जे.पी.आर्य, श्रीमती सुशीला वार्ष्णेय, आनन्द कुमारी, मनबासा राय, कुसुम सिंह, कुसुम वर्मा, सरिता श्रीवास्तव, शैल कुमारी त्रिपाठी एवं स्वामी कृपालु जी।

(रमेश चन्द्र त्रिपाठी, मंत्री)

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
'वेदाधिष्ठान' 539क/234, हरीनगर, पो0-इन्दिरानगर, लखनऊ - 226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

E-mail-
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
व्रती सदस्य	–	250 रु. वार्षिक
ऋत्विक् सदस्य	–	1,200 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	2,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	12,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि 'बैंक ऑफ बड़ौदा' की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 00500 2000 00579
खाते का प्रकार-चालू खाता
बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, हजरतगंज लखनऊ। IFSC code - BARBOHAZARA

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
डॉ.(श्रीमती)वीना कटियार, फर्रूखाबाद
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ

संरक्षक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा, राजस्थान
श्रीमती प्रमोद कुमारी, लखनऊ
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
श्री कौशल किशोर श्रीवास्तव, लखनऊ
श्री जगदीश लाल खत्री, लखनऊ
श्रीमती कुसुम वर्मा, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री रघुनाथ सिंह आर्य, कानपुर
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई
शिवशंकर लाल वैश्य, सीतापुर

आवश्यक सूचना

कृपया लखनऊ स्थित शिविर कार्यालय के पते का उपयोग करें-

डॉ. वेद प्रकाश आर्य,
प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता
19/838, प्रथम तल, रिंगरोड,
इन्दिरा नगर, लखनऊ-226 016

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-२, हिमांशु सदन, ५-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' ५३९क/२३४ हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

ग्राम ग्राम में नगर नगर में, 'आर्य्य लोक वार्ता' घर-घर में